

आश्रय आपनारोऊना नाम.

- २१ पटवारी कालु रामजी कानमल वालोतरा मारवाड
- ११ बंदा हजारी मलजी बलराजजी वालोतरा मारवाड
- ८ सालेछा हजारी लालजी सागमांणी वा । पंचपदरा मारवाड
- ७ अन्यावरण सोड मलजी बलराजजी वालोतरा मारवाड
- ७ साकालु रामजी हजारी मलजी वक्तुजी वा । छेत्रावा मारवाड
- ५ साभांनी रामजी प्रसादीराम वा । वालोतरा मारवाड
- ५ पटवारी हस्ती मलजी शनण मलजी वालोतरा मारवाड
- ५ दांती मुकनदासजी मुलतानमल वालोतरा मारवाड
- ५ साबुध मलजी आसाराम वा । वालोतरा मारवाड
- ५ अगर बाल सारामचंदजी भगवाने दासजी वालोतरा मारवाड
- ७ अगर बाल साटी कमरामजी सेवारामजी वालोतरा मारवाड
- ५ अगर बाला बीलासी रीमजी सांवत रामजी वालोतरा मारवाड
- ५ लुंकड रावत मलजी बलराजजी वालोतरा मारवाड
- ५ श्री श्री माल वस्तीरामजी लगन लालजी वालोतरा मारवाड
- ५ चोपडा मलजी हजारीमल वालोतरा मारवाड
- ५ सासोर दारमलजी पीरांणी वा । मुंगडा मारवाड
- ५ दांती तारचंदजी चुनी लालजी बलोतरा मारवाड
- ४ सांहीदुजी रुगनाथमल वा । उमरलाइ मारवाड
- ४ साप्रभु ललाजी भांनांणी वा । थोभ मारवाड
- ३ साचुनी लालजी अमरांणी वा । वालोतरा मारवाड
- ३ सालसी रामजी घमडीराम वा । वालोतरा
- २ साप्रभु लालजी छोगांणी वा । वालोतरा मारवाड
- ३ मागीर घारीमलजी कुनण मलजी वालोतरा मारवाड

मिले ॥ पकड हाथमां । पाद । १० ॥ अमंगलिक ॥ आंवानो रक्षक
 कहे ॥ बाल आवशो आज ॥ तो त्यां तुमने तुरतहुं ॥ *मरवादेऊं
 माहाराज ॥ ११ ॥ निंद्या युक्त स्तुती ॥ †अवर शब्द नृपतीनी
 नीज नगर ॥ फरे आणने दांण ॥ दीगमल सगला देशमां ॥ ताहरी
 माने आण ॥ १२ ॥ हासी निंद्या ॥ जीव घणा जुग जगतमां ॥
 लेकीर्ती गणी लाख ॥ ए असोप आपुं तने ॥ ले खोवो भरी राख ॥ १३ ॥
 देखाती जुल ॥ धुमाडो सिंदुर समो ॥ काजल जेवी झाल ॥
 चुना जेवा कोयला ॥ राख गुलाबी लाल ॥ १४ ॥ कीलष्टार्थ
 जाऊं गती जो जाय त्यां ॥ करुं ज्यारे लोक ॥ अथाक गुण
 वीचारतां ॥ सरस वये छे शोक ॥ १५ ॥
 अर्थ—हे लोको ज्यां जायनो झाड होय । त्यां ज्यारे दुर्गधी करुं ।
 त्यारे तेनी सुगंधीनो घणो गुण वीचारतां । मारा मनमां सारो शोक
 वये छे । कदापी चीत्र काव्य के अर्थ वे वाली कवितामां कीलष्टार्थ
 आवे ते भुल कहेवाय नही । एक शब्द दुजी वेला आवे । ते पुनरु
 मन दोष कहेवाय ॥ इति रहस्य ॥

पुनरुक्त । राजकुंवर सारो सरस ॥ जुवान तेजो सोय ॥
 पण ननास जाणतो ॥ जो न भणेलो होय ॥ १६ ॥ दोस नही
 पण कानो ॥ फरे अर्थ आकार ॥ सरस बुधि जो मनुपती ॥ तेहनां
 माग सीता ॥ १७ ॥ हे हरी हे हर हे हरी ॥ तुं मुखनो दातार ॥

। पाद ए अप शब्द छे.

* मरवादेऊ अमंगलीक शब्द हे. † अवर ए नी या शब्द छे.

दोलतराये ॥ उत्तर एमांथी लीधां ॥ सातेइ समजीज छे ॥ २७ ॥
 गुढोतर चोपाई ॥ खेदुने शेनु बढुकांम ॥ वीजा पक्ष तणुं गुं नाम ॥
 जो समजे नही उतर सद्य ॥ तो कहुं छुं जाहलवद ॥ उत्तर । हल
 कहो । नुन्यार्थ दोहा ॥ नग दुहीता पति पुत्रना ॥ वाहन धरनी
 नार ॥ रवी तेना पीतुये पडयो ॥ पण नाव्यो भरतार ॥ २८ ॥
 नग, पर्वत, दुहीता, पुत्रीगंगा, पती, शीव, कारतीकस्वामी, वाहन मयो
 धरनी, वीष्णु नार लक्ष्मी, पीता समुद्र, तेने पर मूर्ध पयो अस्त थयो
 पीण भरतारनु आवो । दी। दीवाली । वी. वीजयदस्य । उ। उतरायन ।
 ऊ । ऊतासना । वलेवना । आवानो कोल हतो पीण भरतार न आव्यो.
 तेथी उछाट थाय छे ॥ २९ ॥ अधिकार्य ॥ विदीउ ऊवना वायदा
 ॥ बीत्या जोता वाट ॥ सुझ हीयडा मांहे सखी ॥ उपज्या अधिक
 उचाट ॥ ३० ॥ सर्वतो भद्र ॥ अनुष्टुपच्छद ॥ मांगुमु एक ते
 आपो शापथी लक्ष्मी जोखसे ॥ ज्यां मुधी सूर्यने चंद्र ॥ हिंदु शीश
 शिखावसे ॥ ३१ ॥ गामुंत्रीका । अश्वगतीचंद । कपाटबंधेद
 ॥ दोहा ॥ सार सार उर धार नर ॥ धर शीरपर करतार ॥ झेरवेर उर
 दुरकर ॥ परहर परधरनार ॥ ३२ ॥ इत्यादिक अगणीत दसा । रचना
 चीत्र वीचीत्र ॥ दखाडीदीशी मात्रमे ॥ मनमा धरज्यो मीत्र ॥ ३३ ॥
 धनी उपजे जे अर्थमां ॥ उत्तम कविता एह ॥ ग्रंथ वधे वीगते लखे ।
 कहुं हुंकांमां तेह ॥ ३४ ॥ धनीनु उदाहरण ॥ नर वेन्याया-
 धीशनी ॥ भली करी मे भेटा ॥ मुख मोटो छे एकलुं ॥ एकनो मोटो पेटा ॥ ३५ ॥
 गनजेद । गनधुर अछर के कहे ॥ जानं लेट, गन अंग ॥ गन स्वामीते

जानीए ॥ रस दै अरी परमान ॥ ४५ ॥ याके फल ॥ ठप्यै ॥
 मम ऋधि जऊ यमीदास लछ बंधही मीउ जानो ॥ मीत रीपु पो
 करत. सबही सुख भृत्य भृत्य मानो ॥ भृ मिसिद्य भउ दै हांनि
 जानि भृत रीपु है हरवै दे उदास हे वोफलो ॥ मीत साधारन करे
 ॥ उभृ विपतरोध उस दे रीपु ॥ भृत्य मुन्य रिम जान नीय ॥
 तिय नास रिपु ॥ भृत्य हान रिउ ॥ कवि जन दुगुन विचार कीय
 ॥ ४६ ॥ याकी मुची ॥ दोहा ॥ मीतमीत अरु मीत दासही ॥
 ॥ भृत्य मीत भृत भृत जान ॥ मीत्र उदास मीलि हितो ॥
 यगन शुभ परीमान ॥ ४७ ॥ अशुभ कथन ॥ दै उदास उस रिपुहि
 मीत रीपु ॥ भृत्य रीपु ही उदास ॥ भीउ भृतउ मीतरु ॥ उभृत
 मीत रीपु दै अशुभ प्रकाश ॥ ४८ ॥ दग्ध वरनन कथन ॥
 दग्ध घन धर स्वभ अष्टंड ॥ दग्ध वरन परमान ॥ कवऊ आदिनऊ
 आनीए ॥ कविजन परम मुजान ॥ ४९ ॥ याको फल ॥ ठप्यै ॥
 हहो करे धन हान ॥ झझो नीत मत झक झोरे ॥ घयो करे तन
 गान ॥ ननो मुन नासनी होरे ॥ धधो करे मुन्य धाम ॥ ररो तन
 रोग कटावन ॥ रग्नो करे तन्य मृत्य ॥ भभो नीत प्रते भ्रमावत ॥
 प भद्र वरन फल भशुभ मय ॥ शुभ फल सबही कोहरे ॥ परि त्याग
 रग्नो. कवि मिय कही ॥ कवित आद वर्जित करे ॥ ५० ॥
 नाम मंजा गीनती ॥ चोपई ॥ मेखरूचंद एकको नाम ॥
 मेख मुगम दोय अभिगम ॥ भवनरु लोक तीन परमान ॥ मुतीरुदे
 चारको भग ॥ ५१ ॥ बांन पंचका कहे मृगिध ॥ पष्ट कतु बको

जान भज मध्य तिहि नाम ॥ हे सुखको धाम ॥ १० ॥ प्रभुजीनी
 स्तूती दोहा ॥ जय जय अडग जगपती ॥ जय मुख निधि साक्षा
 ॥ जय जय जननी जनक ॥ जय जय प्रभु प्रख्यात ॥ ११ ॥
 ठंद त्रीजंगी ॥ जय जय प्रभु प्रख्याता ॥ पद पंकाता ॥ सुगुण
 गणाता ॥ गुणज्ञाता ॥ तुं भगनी भ्राता ॥ दील अवदाता ॥ शुभसं
 भाता ॥ साक्षाता ॥ जय विश्वविधाता ॥ अलख लखाता ॥ मुक्तम
 नाता ॥ मुद माता ॥ जय जय जग त्राता ॥ तुं पीतु माता ॥ १
 सुख साता ॥ सुखदाता ॥ २ ॥ जय पुर्ण प्रकाशी ॥ विश्ववीलार्म
 ॥ अखील नीवासी ॥ आकाशी ॥ जय अचल उजासी ॥ विप
 विनासी ॥ छत नीज दासी ॥ छे खासी ॥ ऋषि सहस्र अठ्यासी ॥
 सिध चौरासी ॥ तत्व तपासी ॥ चीत चाहता ॥ जय जय जग
 त्राता तुं पीतु माता ॥ दे सुख साता सुख दात
 ॥ ३ ॥ जय जय जगस्वामी ॥ सदगुण गामी ॥ निर्मल नामी नई
 खांमी ॥ जग अंतर जामी ॥ अचल अकामी ॥ शुभ विश्रामी ॥ सु
 धांमी ॥ प्रभु तुज पद पामी थाय प्रणामी ॥ आत्म रामी जनथात
 ॥ ४ ॥ जय ॥ जय मर्वाधारा ॥ सुख करनारा ॥ प्रीतम प्यारा ॥ सु
 गारा ॥ तुज मनथी न्यारा ॥ जे नरदारा ॥ भयना भारा भर
 जारा ॥ जय ॥ ५ ॥ तुं ममग्र्य तरवा ॥ तारण करवा ॥ अभरण
 भरवा ॥ भय हरवा ॥ दुःख आदरवा ॥ भगनी धरवा ॥ गुण ब
 जवा ॥ गुण मरवा ॥ चउं कीर्ती उचरवा ॥ टीक थड ठरवा ॥

॥ तामरनेन-तांवाजेवी आंखवालो ॥ तुंगा-उंचा उद्धत ॥ तोटक
 तुटेल ॥ दानिका-देनारी ॥ दिवा-दिवस ॥ दुमीलाप-दुष्टमीलाप
 दूत विलंबीत-दोडवुं ने उभो रहेवुं ॥ नग-परवत ॥ नय-नम्रता
 नल-रामनो मुभट वांदरो ॥ नव पल्लव-नवा पांढडा ॥ निशिपाल
 राते चोकी देनार ॥ पय-दुध ॥ पुष्पीताग्रा-टींगीओ उपर फुलवा
 वेलो ॥ प्रभावती-कांतीवाली ॥ प्रतिमाक्षरा-थोडा अक्षरवाली
 ॥ प्रीयवंदा-वाहलुं बोलनारी ॥ भासकी भासकी-वंदीखानो
 भमरावली-भमरानीपंक्ती ॥ मणी वंध-हाथजुं कांडुं ॥ मत गंधद
 मचेलोहाथी ॥ मंदाळांता-गांडी अने गभराएली ॥ मधु-मिठाश
 मल्लीका-एक जाननु फुलनो झाड ॥ माणवकावलीड-वाल्क
 रमन ॥ मुनी गेखर-रुपीनो तोरो ॥ रथोना-गाडीनो अभीमान
 रंभा-अपसरा ॥ बह्नी-बेलो ॥ वंशस्थ-वचमां रहेनार ॥ व
 नीन्हा-वसंतना तीलकरू नाली ॥ विधुतमाला-विजलीनो जगो
 चिमोटा-मात घामेली ॥ वैश्वदेवी-नीत्य होमकरवा वालो ॥ शर
 वाग ॥ जगत-जगत ॥ जालिनि-जिहाल ॥ रीकरणी-परान ॥
 जिहवा-चोरी ॥ शीत-नालक ॥ शूणी-माला ॥ शैल-परवत ॥
 शेलीका-मोदनी ॥ समानिका-नरारी ॥ समुद्रि-जवावालो ॥
 शक्ति-शक्ति ॥ साया-पीपीओगुसा ॥ सांरंगी-सारा अंगनाडु ॥
 सांरंगी-सांरंगी ॥ सपना-समीरणी ॥ साव्य वाली-सामवा
 साव्य-साव्य ॥ सगी-सगी मादी ॥ स्यामन-सगी ॥

॥ स्याम-स्याम ॥ स्याम-स्याम ॥ स्याम-स्याम ॥

॥ ठठने दीन कही पचीसी ॥ सफल फली मुज आस ॥
इती श्री पचीसी संपुर्ण ॥

॥ टुहा ॥ वमो वमाइ नांकरे ॥ वमो न बोले बोल ॥
हीरामुखसें नही कहे ॥ लाख हमारा मोल ॥

॥ अथ श्री मुनिचंद्र गुरीस्वरजी साहेबकी
सहाय लीख्यते ॥ हारे मारे ॥

तप गह्व पतीनां दरिसणथी सुख थायजो ॥ वीर
पटोदर देखी मनमां गह गहेरेलो ॥ हां० ॥ सुमतार
सनां दरीया जग सुख दाय जो ॥ लदीयापुर नयरे
गुरू समोसरथा रेलो ॥ १ ॥ हां० ॥ संघ चतुर विध
आवि प्रणमे पायजो ॥ जांणी अवसर गुरूजी धर्म
कथा कहे रेलो ॥ हां० ॥ सुणता जविना मनमा आनंद
थाय जो ॥ जीम जलधारे चातक आतम पोखतारेलो
॥ २ ॥ हां० ॥ पांच सुमतीने तीन गुप्ती चीत धारजो ॥
पंचाचारते पाळे चारित्र नीर्मलोरेलो ॥ हां० ॥ अठारे
सहस सीलंगना धारी जाणजो ॥ द्दम्या संवर संजम
सुंते अलं करयारेलो ॥ ३ ॥ हां० ॥ संचेती गोत्रते आप
उधारयो श्री गुरु रायजो ॥ जीकचंदजीके हुलमां गुरु

॥ ठठने दीन कही पचीसी ॥ सफल फली मुज आस ।
इती श्री पचीसी संपुर्ण ॥

॥ छुहा ॥ बन्धो बन्धाइ नांकरे ॥ बन्धो न बोले बोझ ।
हीरामुखसें नही कहे ॥ लाख हमारा मोल ॥

॥ अथ श्री मुनिचंद्र गुरीस्वरजी साहेबकी
सहाय लीख्यते ॥ हारे मारे ॥

तप गह पतीनां दरिसणश्री सुख थायजो ॥ वीर
पटोदर देखी मनमां गह गहेरेलो ॥ हां० ॥ सुमता
सनां दरीया जग सुख दाय जो ॥ लदीयापुर नयन
गुरु समोसरया रेलो ॥ १ ॥ हां० ॥ संघ चतुर वि
आवि प्रणमे पायजो ॥ जांणी अवसर गुरुजी भर्म
कया कहे रेलो ॥ हां० ॥ सुणता जविना मनमा आनंद
पाय जो ॥ जीम जलभारे जानक आत्म पोखनारेलो
॥ २ ॥ हां० ॥ पांन गुमगीने तीन गुप्ती नीत धारजो ।
॥ ३ ॥ पावे पावे जागित नीमिलोरेलो ॥ हां० ॥ अठार
॥ ४ ॥ सीपमना भागी जाणजो ॥ कस्य गंज गंजम
॥ ५ ॥ कायायो ॥ ६ ॥ हां० ॥ गंजनी मोत्रे आप
॥ ७ ॥ सी मुं मयजो ॥ नीकंदजीक हृदमां गुं

लकजुं चली जात ॥ हमही चलेंगे गये ॥ ग्वलकं
 देखते ॥ ७ ॥ अथ दुजी अशरण जावना ॥ चौपड ॥
 जीवद्रव्य पुजलमे मेरता ॥ आयु करमश्रीत जोलु सता ॥
 थिति पुरण जये कहाये मरणा ॥ तादीन नही काजका
 शरणा ॥ सवैयो ॥ ३१ ॥ मंत्र तंत्र जंत्र जरी ॥ धरीही
 रहत धरी ॥ धरी कजंहो तन वसाऊ काऊ प्रांनको ॥
 दोर धाव उंपद उपावु कतु चले नांही ॥ दीपजुं उदहास
 जात ॥ पैरयो पव मांनको ॥ दुरहीते देखतही ॥ गे
 रहे खग कुल ॥ परत अचिंत्यो आय ॥ दाउजुं शीवा
 ॥ नको ॥ ठारी सब आर जार राज माया मोह जार
 ॥ अंतकाळ शरण जजन जगवंतको ॥ ७ ॥ पवनके पुतसें
 प्रचुत जो सपुत पुत ॥ कांहां तात तारंगे ॥ सकी-
 न्हो तात तारे हे ॥ चक्रधर सगरके ॥ तनयरु जार
 साठ ॥ निमतके आएदेप ॥ पलमे प्रजारे हे ॥ दरवकी
 कोरा कोरी ॥ अरव खरव जोरी ॥ नंद राज जूजं
 काहा मोत तेनी वारेहे ॥ अजर अमरराज साहाराज
 सुख काज ॥ जपजगदीस जने पतित उदारेहे ॥ ८ ॥
 हंस गती गांमनी ज्युं ॥ देह दुती दांमनी ज्युं ॥ कांम

हीन ठेहराता ॥ अधके लरध जात ॥ पात जुं वगु-
 लाको अथीर परीनयोहे ॥ आही ते संसारचाव धरज
 चेतन राव ॥ अपनो सुचावगही ॥ जोती रूप जयोहे
 ॥ १३ ॥ कवही उत्तंग अंग ॥ होत ॥ हेम लंगसंग ॥
 ॥ कवज पतंग जुंग ॥ कीटक अकारजुं ॥ कवजक ध-
 नी नीरधनी सुखी दुखी जीव ॥ कवजक वेद वीप्र
 कवज चंमारजुं ॥ जेसे नट ऐक जेप ॥ थटत अनेक
 थाट ॥ तेसे एक जीवके अनेक अवतारजू ॥ धनधना
 शालिजद्र शुलीजद्र जंघु बज्र ॥ त्यागीजे संसारके ॥
 जेसे अजय कुमारजू ॥ १४ ॥ अथ एकुलत्व जावना कथ-
 न ॥ दोहा ॥ जमता करता हे नही ॥ करता चेतन राव
 ॥ जो करता सोइ जोगवता ॥ गही एकत्व स्वचाव
 ॥ १५ ॥ मवेयो ॥ ३१ ॥ कोनतेरे मान तात ॥ कोन तेरे
 अंग जान ॥ कोन त्रान जान ॥ मवही स्वार्थी ॥ अ-
 रत मटाउ पर ॥ लोककं नटाउ होत ॥ धनकुं बटाउ
 होत ॥ मीउकं धनार्थी ॥ ताकीगत कोनबुजे ॥ स्वार-
 थमें मोड आमंजे ॥ नवमें अरुज कोच ॥ नही परमार्थी ॥
 नान विगार चीन ॥ नुं नोहं अके लोनीन ॥ उपट

पुजल मुरतीक ॥ ओर हे अमुरतिक ॥ जीव द्रव्य
 तन ॥ अजीव पांच मांतीये ॥ अपनो स्वभाव धरी
 हे सबै द्रव्या जदपी सीलेहे तोउ ॥ न्यारे पही सांती
 योही अन्य जाव जानी ॥ राज जीव न्यारो मांती
 नीह चेहेनी गमवांती ॥ संशयन आनीये ॥ २० ॥ न्य
 धनधान धांस ॥ गांस ठांस कांस सब मात तात अ
 न्यारे ॥ अंतकाल पायके ॥ राज अविनासी लख चोरा
 को वासी ॥ कऊं होत न उदासी जगमासी सदां मन जायं
 सीथ्या मद ठक्यो वक्यो सीथ्या मेरी मेरी ॥ सब
 हे बीवेक ॥ खीतमो घनठाइके ॥ वाजीकुं संकेदी
 वाजीगर उठ जात ॥ पलकेक खलककुं ख्याल सो
 खायके ॥ २१ ॥ संध्या काल तरु काल ॥ वेठे अ
 खग कुल ॥ रात वसी प्रातउमी न्यारे न्यारे जातु हे
 लेतहे वसेरा रात ॥ पंखी जुं सराह बीस ॥ जोरत
 प्रीत जोलु ॥ होत न प्रजातहे ॥ गेइनके संगगवाल
 मोलतहे सबदीना आवतहे प्रदोष गेह ॥ इकेलं
 दिखातुहे ॥ एसे अन्य जाव मन ॥ आनीयत र
 कवि ॥ ग्यांनके उद्योत होत ॥ अग्यांन बीलातु

दीन कीजे तो ॥ खजानो राखिय ॥ तरती कमरो सीढ़ी
 ॥ नर केहे नवछार ॥ नारीके इग्यारे जुं ॥ वहत अ
 श्रुची जेसे ॥ मंदरकी मोखीहे ॥ सबमें सुंमठी गठी ।
 काच कीसी जंपी कीधुं ॥ अरंरुकी जुंपी ए सीकायप
 घोकीहे ॥ २६ ॥ अथ आश्रव जावनां दोहा कार
 जोहे पापको ॥ जाकर आवत पाप ॥ तास
 आश्रव कहत हे ॥ दे आत्म जंताप ॥ २७
 सवेयो ॥ ३१ ॥ प्राणीको सिद्धार मृषावाणीको उचार
 पर द्रव्यकोजुं अपहार ॥ दुरे परीहरीये ॥ नीके नी
 कांमनीके ॥ कांमसुख दुखहेतु ॥ फीके होत ठीन मां
 ॥ धोखे दिनुं धरीये ॥ सचीत अचीत फुनी ॥ बाहि
 अंतरगिनी ॥ बंधु हेतु परिगह ॥ पुहनी तेररीये
 पापनीर पुके ॥ प्रताह मग आश्रवणे ॥ इनहीसुं प्र
 तीनिहे ॥ पीनगर जरीये ॥ २८ ॥ बडे बडे वाग्ग
 गवग गगगगके ॥ फगग केवरीभगी फगगदे फंदमें
 दमदी वगव दाग ॥ वगवग श्रीजं ओग ॥ दग
 नगग गग ॥ पगग गुनिदमें ॥ खानगे अगाध जात
 गग गीज आदात ॥ गगगके गगगगे ॥ गीमी दृग

को ॥ धारत सोइ धर्म ॥ ३९ ॥ सवैया ॥ ३१ ॥ दान
 सीलतप जाव ॥ चारेही वीराजे पाव ॥ विमल विग्यां
 दग ॥ दया मुखदाखीहे ॥ सोजाको समुह जाको ।
 विठद विवेक पुठ ॥ निश्चे व्यवहार सार ॥ उजे श्रृं
 साखीहे ॥ संपदाहेतु ॥ दुजंलोकमें सुखदेतु ॥ अमृत
 श्रवती धार ॥ संतवठ साखिहे ॥ ऐसे धर्म कामधेनु
 चरती वीचती त्रण ॥ राज तेरे चोरनते ॥ नीकी जांनि
 राखीहे ॥ ४० ॥ धर्म अर्थ काम ॥ तीनुंवर गहीत का
 म ॥ उत्तम उदार ॥ सुखी सारमन ठानीए ॥ चारुंगत
 मांजसार ॥ मानवको अवतार ॥ साधन त्रीवरगको
 चतुर चीत आंनीये ॥ तीनोमें प्रधान बुधि ॥ कहत
 धर्म सुध ॥ अर्थ कामको ज्युं ॥ धर्म कारण पीठानीयें
 राजनर जव पाय धर्मजो करत नांहि ॥ पशुजुं वीफ
 ती को ॥ जीव तव्य जानीयें ॥ ४१ ॥ मांजी जीनवां
 जीनो ॥ नीके जांनिपहि ठानी ॥ ज्ञानी धर्म जांनि जी
 नो ॥ तृष्ठाकुं तोरीहे ॥ जीनकी अमूढता ॥ नगुढाद
 न बोढा जेसे ॥ सुमती आरूढा प्रोढा ॥ जेसे प्रोढ
 गोरीहे ॥ लेतुन अदता ॥ अजयदानसुं जरता मता ।

होवे शत्रु ॥ ताइ माता विनु स्वार्थ ॥ असाताकी जुं
 दाता हे ॥ आपसमे राज काज ॥ ज़ीरी गजराज ज़ेसे ॥
 ज़रत बाजुवल कोन काको ज़ाताहे ॥ चुलणी ज़रायो
 लाख ॥ मंदिरमें ब्रह्मदत्त ॥ वीरतंत एसोतो सिधांतमें
 वीख्यानाहे ॥ लोकको स्वरूप एसो ॥ मांज
 जाई ॥ पुनीयांकी सारीयारी ॥

॥ ४६ ॥ अथ बोध दुरलज ज्ञाव
 माणीक सुत कामनी ॥ जोग
 दूरलज नही जीवकुं ॥ दुरलज
 सवैयो ॥ ३१ ॥ थल जयो जल
 जयो ॥ तरु पशू पंक्षी
 जयो दांनो जयो ॥ न
 सारी जयो ॥ जीषणइ
 जीन वचन रूची ॥ ब्र
 ऐज चार सुवीचार
 साधनके ॥ उत्तमहे
 पाइवो ॥ नवेर वेर पा
 जसुं ॥ देव गुरु धर्मकुं

नामगने ॥ नवरात्र मङ्गी यम मन् ॥ नवरात्र गा पञ्चक
रहे ॥ नव खगरहो गुण जगत् ॥ १ ॥

॥ पथ मा राणाजी मायेव श्री श्री श्री श्री १०८ श्री श्री श्री श्री
नामुरज श्री फतेसिद्धजी मादाराजा कृपार श्री श्री श्री श्री १०
श्री श्री श्री भूपालसिंहजी हा गुण वर्णन ॥ गुणकान्त जोगये ॥

॥ सरस्वती जंमारकी ॥ बनी अनोपम वान ॥ ज
ज्युं खरचे र्युं र्युं वधे ॥ वीन खरचे खुट जात ॥ सवेय
॥ ३१ ॥ सरस्वतीन जुवन ॥ तीहां वाजते पवन ॥ चे
तन चाहते सुवन ॥ पंथ दुर जानोहे ॥ जाणता सऊ
गत ॥ होय वेठते जगत ॥ रागरेपसें लगत ॥ तोटे
नही ठानोहे ॥ तप गठ पती स्वाम ॥ जीनजी कोरव
नाम ॥ कहे द्रव्य ताई पांम ॥ प्रजुगुण गानोहे ॥ कहे
कवि जेत सिंधु ॥ सुणहो जवीक वंधु ॥ ४ ॥ वतअंकार
विंदु ॥ जवपार पानोहे ॥ १ ॥ सरस्वती मात जेसे ॥
रूपवके तात जेसे ॥ ब्रम्हा या विधाता जेसे ॥ ऐसे
गुरु ज्ञानीहे ॥ गाजको ज्युं मोर जेसे ॥ चंदको चकोर
जेसे ॥ जीनवरके नांमको ॥ ऐसे गुरु ध्यांतीहे ॥

(३४)

आद अक्षर गुण ॥ फजर उठ करे हरी समरण
तेज प्रताप वधे जगमे ॥ सिंधु कीलोलमें प्रगट ज
जानुं ॥ हर्ष जइ दुनीजं मनमें ॥ मातकुं देखत बा
फुलावत ॥ हरीकी इठा जीम मांखनमे राम रखां हम
होवत राजी ॥ एाही प्रह्वजं जग जोवनमें ॥ ६ ॥ पदर्व
वरणन ॥ लषमण रामचंद्र बलवंता ॥ बाहीकी पदर्व
आपवरीहे ॥ बावन राजाके मांहे सीरोमणी ॥ शिं
शोद्या वंशकी जीतकरीहे ॥ हिंदु वासुरजहो तुमे
उत्तम ॥ धर्म मारग मे बुधि धरीहे ॥ जेतकहे मोय
दरसण दीनें ॥ ताहीहे दुविध्या दुर टरीहे ॥ ७ ॥
वरण बाघेस्वरी ठंदसें परीवार वखांणतेहें ॥ सर
सतपे पृथ्वी पतिराजा ॥ फतेसिंह जगत जस पायो ॥
तुम कुलेचंद सुपुतो सोहत ॥ कवर जुपाल सिंह स
वायो ॥ जंकारी कोठारी दीवांन बुद्धि वंतजुं ॥ कुमा
रगने दुरनछायो ॥ बावन राजनके सीरसोजत ॥ हिंदु
वासूर्य एसे नामदीपायो ॥ ८ ॥ कुमाण सनेतो मानन
आपत ॥ सजन कुं सूखको जगदाता तुम प्रजावथी
जगत सहु सूखीयो ॥ सुगुणाकोतु दे सूखसाता ॥

प्रजा प्रतीपात ॥ जेत सागर मा जगतमें ॥ मंगलमा
नृपात ॥ ३ ॥ इती नृप जगतमें ॥

॥ गगन गंगागात्र वनेन मणीया पदानी ॥ १२ ॥ गगन गात्र मणी ॥

मंवन उगणीमे वरस सिनोतरे ॥ काली माम मण्ड
इनु सारी ॥ जकपक दसम गतिार हुं ॥ चारिमे एक
वजे सुविचारी ॥ मुनी चंदगुं हिदांग पत्नीकी ॥ मुखा-
कात शीव मेहल नीहारी ॥ जेत कहे सोय आनंद
उपनो ॥ हिडुवा सूर्य तुम येऊं नारी ॥ १ ॥ हिडुवा
सूर्य प्रथम पभार्या ॥ वेठककी सक नड तयारी ॥ परम
गुरुजी पीठे तीहां आवत ॥ खटजण नृपति सुखकारी
वेठत नयन हर्ष जण मन ॥ सुगुरु तव आसिस उचारी ॥
जेत कहे गुरु कृपा करी मनसैं ॥ उपदेश वांणी कहतहं
प्यारी ॥ २ ॥ फतेसिंह नृप हात सेंदीनो ॥ दुसालो एक तेन
जरी कीनारी ॥ रूपक पांच धरया गुरु आगे ॥ सरूपसिंह
कोशको सुखकारी ॥ तव गुरु नृपने जेटणो दीनो ॥ पुस्तव
ज्ञान बहरको नारी ॥ जेतसागर कहे नृप जीवो ॥
फते सिंह तुम पर उपगारी ॥ ३ ॥ कवर नृपात सिंह
माहाराजा ॥ शंजु मंदिर मे वेठककीनी ॥ रूपक चार
धरया गुरु आगे ॥ शुद्ध मनसैं गुरु आसीस दीनी ॥

ध्यान करयो सदा ॥ मन धरीपर उपगार ॥ दया दान
 करता रहो ॥ जांणी अश्वीर संसार ॥ ५ ॥ दाने दोलत
 पांमसो ॥ सीखे जस सौजाग ॥ तपस्या कर्म खपावणी ॥
 जावे रुधि अथाग ॥ ६ ॥ इम जांणी जीन धर्मको ॥
 धारो रुदयमें ध्यान ॥ देव गुरु चीत धारजो ॥ जुंपावो
 सनमान ॥ ७ ॥ कवी प्रगट करता रहे गुण अवगुणनी
 पीठाण ॥ विण जाण्या नवी कह शके ॥ जूठ न दाखे
 वांण ॥ ८ ॥ कागद देजो ऊसखनुं ॥ लीखजो लायक
 कांम ॥ धर्म स्नेह बधतो रहे ॥ सुणजो सऊ गुणवांन
 ॥ ९ ॥ संघ चतुर वीध महंतहो ॥ ऊंठु वाल अज्ञान ॥
 जुलचुक माफी करो ॥ गुरु पदको सनमान ॥ १० ॥ संवत
 सागर धीपठे ॥ अंक इंद्रसु प्रमाण ॥ मागसर मास
 नेत्र तीथो ॥ वार आदित्त वखांण ॥ १ ॥ इती ॥

॥ श्री संघ तरफमें अग्रेसरी कोठारीजी काजस वर्णन ॥ दुहा ॥

कोठारी बलवंत नर ॥ बलवंतसि जगजांण ॥ तेह
 आद अक्षर तणा ॥ गुण सुणजो जन जांण ॥ १ ॥
 सवयो ठंद ॥ २३ ॥ कोल वचन करत मनसाचे ॥ ठाम
 तीकांणे ठें जस पायो ॥ रूपज देवकी कीरपा तो पर ॥
 वधे तेज तोय मान सवायो लक्षण योग लग्न सुधी उत्तम ॥

नाना पुर मूलपरमें ॥ २० ॥ गोमायो नाथ ॥ ३॥ न
 जगत्तंत्री नाथरी ॥ २१ ॥ विविधमें कीप ॥ गुण गु
 द्योवके ॥ पीमज विषा मोघ दीप ॥ ४ ॥ जेत सा
 मन दृग्ग धर ॥ मर पातमके काज ॥ प्रनके गुण
 वत जण ॥ बांधी कविना पाज ॥ ५ ॥ मेद पाट
 व्यधिपती ॥ फतेसीन् जूपाज ॥ चीरंजीव या जगतमें
 गठ ब्राह्मण प्रतीपाल ॥ ६ ॥

॥ अब मेंताजी कनइयालालजीके गुण वर्णन ॥ दुहा ॥

दीपक ज्युण सोनतो ॥ शिंशोया वंश मजार ॥ क
 नैयालाल नामे प्रगट ॥ जाणत सहु संसार ॥ १ ॥
 सवेयो ठंद ॥ २४ ॥ आद अक्षरके गुण ॥ मेगल ज
 चाले मदमातो ॥ तप तेजसें क्रोध मद दुर हवायो ।
 करत काम श्रीसंघ अगवांणी ॥ वीनयकी बुद्धिसे न्याय
 वेठायो ॥ इम जन जाणतहे जग सारो ॥ या नरसही
 चार बुद्धि पठायो ॥ लाखाही लक्षणहे अती उत्तम ॥
 लक्षण नीचकोते दुर न ठायो ॥ २ ॥ कनइयालालमें
 तोवरु जागी ॥ नीत्य देवगुरुकी सेवातो सारे ॥ सीतल
 नाथ प्रजाव जग मोटो ॥ मनस कामना तेह सुधारे ॥

नित्यही ध्यांनजनीको धररे ॥ नांम रद्यां जगतही ज
 वाधे ॥ सुशत काम सदा तुं कररे ॥ वचन गुरुको ह
 या वीचधारी ॥ जव सागरसें तुंही तररे ॥ १ ॥ सा
 सतगुरु एकही देख्यो ॥ श्रीविजय मुनी चंद्र सुरीश्व
 जेसो ॥ ओर जगतमें निजरे नही आयो ॥ ध्या
 ईश्वर कोही बोवेसो ॥ जागत सोवतही नही वीचरुं
 दृढ चीत ध्यांन लग्युं केसो ॥ तलफत प्राणमे रो
 निशिदीन ॥ थोका जलमें मीन जुं तेसो ॥ २ ॥ मीन
 तलफे मोतके करसे ॥ ऊंतो तलफुं तुं रागके मारयो
 स्नेह करमकी जुंकीगती ठे ॥ जेतव देजं कहतही ह
 रथो ॥ विजेमुनी चंदसुरीजी साहेव ॥ वीन मोते मो
 आजही मारयो ॥ कोईको घायल कटारी करतहे
 मोजं तो आप वीरह वीदारयो ॥ ३ ॥ चावतजं में निशि
 दीन तोजं ॥ तें तो मुजकुं डुर कर मारयो ॥ कुस
 खेमको कागद देके ॥ सतगुरु आपको काराज सारयो
 लीखत लेखमें दरसायो नांही ॥ तेही दगो मुज चीत
 मारयो ॥ काहा कजं ए गती अगोचर ॥ जेतव दे
 कहतही हारयो ॥ ४ ॥ संवत सिधि धीपकही दाखां

यके ॥ दीयो ग्यांनसूर लोक ॥ ईश्वर नांम संचारतां ॥
 गयो सुरीपर लोक ॥ १३ ॥ वारस धारे वजायके ॥ उ-
 पर वाजी एक ॥ मीनट द्वादस उपर गयां ॥ पोहतो
 सुरग विवेक ॥ १४ ॥ अमर लोक उपनो जवे ॥ वर
 त्या जय जयकार ॥ उपासक साधु सवे ॥ करतहे चीत
 वीचार ॥ १५ ॥ जाय संचारे मेकीपे ॥ वेगो जग गुरु
 ज्ञाण ॥ पद मास नस जीयां थकां ॥ निकस्यो दीगो
 प्राण ॥ १६ ॥ सवेयो ३१ ॥ समज चतुरां सार ॥ मीलके
 कीयो विचार ॥ लाया बोलायसु तार ॥ मोल घरवायो
 हे ॥ मसरू लायाहे दाल ॥ तार गोटी उंचो माल ॥
 दरजी बोलाया बाल ॥ साज सजवायो हे ॥ नवाय
 धोवाय राज ॥ कीना सज विधिकान ॥ वांग्या सवे गुरु
 राज ॥ पुठालो उढायोहे ॥ खमा खमा करे लोग ॥
 सवे मन धारे सोग ॥ कहे जलो पाटयो जोग ॥ द्वार
 धारे लायोहे ॥ १७ ॥ पुहा ॥ गाम खोलाहे खांतसुं ॥
 काय्यो चांमासो सार ॥ निश्चय धारी मन मांयनें ॥ मोटी
 कीयो वीचार ॥ १८ ॥ जीणी ग्यांनकी जुमीका ॥ फर-
 मवा जोग जो होय ॥ तेह ग्यांनसुं जइ मीले ॥ टाल

ठाम ठले हात ॥ पर जन सहु चींता करे ॥ क्या से
 जासां सोथ ॥ २६ ॥ रेमन अप्पा खंचकर ॥ चिंता जाळम
 पारु ॥ सुख दुख जे तो पांमीये ॥ ते तो लीख्योली
 लाक ॥ २७ ॥ ठवी राते जनमसें ॥ लीख्या विधाता
 जाळ ॥ फल ते तोही पांमीये ॥ जे तो लीख्यो लीलाक
 ॥ २८ ॥ सवैयो ॥ ३१ ॥ शरणमें धरणमें ॥ रणमांहे लर
 णमें ॥ खेती पांती करणमें ॥ जुंझमां हे नारेगो ॥ काज-
 मेंक राजमेंक ॥ आगवोट ज्याजमेंक ॥ ऊगका जंज
 जकरी ॥ ऊआ मांहे नारेगो ॥ सुखमेंक दुखमेंक
 मरी मारी ऊकमेंक ॥ जल अग्नी वीपजय ॥ कीसवि
 दांगेगो ॥ कडे कति जेव गुणो ॥ राज तुमे नवि जनो
 जेव जाने दीनानाथ ॥ कोन जांति नारेगो ॥ २९
 मीया ॥ ३३ ॥ आयां आदर देतो हो जगगुरु ॥ वोड
 मतोडे जणे कीण मेवे ॥ गुण दुखका मीमथो जगमें
 ॥ जग सागर कडे कृण मेवे ॥ लोक राज मोरीदांग
 जाळहे ॥ लीयां सद साय्यमे मेवे ॥ क्या मुजे का
 ॥ ३४ ॥ दुसरे ॥ आदी मनी मांय कर्दी नही पेशे
 ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ मनेकी मोत्रे व्याणंद ॥ नीयाजी कुं

सूरि ॥ ३४ ॥ करना मनमे व्याग ॥ कोउद्वीन मीउग
 नणी ॥ पोदतो स्वर्गमे वास ॥ चाखो तेही मुनीचंद
 सूरि ॥ ३५ ॥ हुं पापी कर्म जीव ॥ गुग नही ताग
 लीख्यो ॥ उत्तम जगनो पीव ॥ जोष गयो मुनीचंद
 सूरि ॥ ३६ ॥ सुतां वेठां नही चेन ॥ निंदा पीण आवे
 नही ॥ नेत्र फाटा दीन रेण ॥ कव देखुं मुनीचंद सूरि
 ॥ ३७ ॥ राग हृती मनमांय ॥ ते डुरे नाठी परी ॥
 उदासी मनमांय ॥ दे गयो तुं मुनिचंद सूरि ॥ ३८ ॥
 हसतां न आवे हास ॥ दीखगीरी दीखमां जरी ॥
 नीकले न पापी स्वास ॥ ब्या उपाव मुनीचंद सूरि
 ॥ ३९ ॥ जग सुखी याते लोक देखुं हसताऊं सही ॥
 मनने राखु रोक ॥ विचरतुं मुनीचंदसूरि ॥ ४० ॥
 हुं जुं आवे याद ॥ विचारयो नवी वीचरे ॥ ए मोटो
 वेपवाद ॥ राग तणो मुनीचंद सूरि ॥ ४१ ॥ जगनें
 हसतो देख ॥ हु तो मन राजी रहुं ॥ परने सुखीयो देख ॥
 नही रूतुं मुनिचंदसूरि ॥ ४२ ॥ ए घुरु लाएपाट ॥ कीण
 नरोसे कर गयो ॥ वीगर विचारी वाट ॥ तुंही चाख्यो
 मुनिचंद सूरि ॥ ४३ ॥ साधुको समुदाय कीण प्रजु न-

तुं मुनीचंदसूरी ॥ ६० ॥ पांच वरस पट मास ॥ तू
 मोरी प्रतिपाल करी ॥ पोहतो स्वरगे वास ॥ विरह
 मुनीचंदसूरी ॥ ६१ ॥ अत्र तो मोय आधार ।
 जगमें कोइ दीसे नहीं ॥ गुरुजी अरजी मनधार ।
 खेंच मोरी मुनीचंदसूरी ॥ ६२ ॥ तुंसे सुगुण सुजाण ॥
 आगम नीगम देखी सहु ॥ जातां पीण बुद्धिमान ॥
 कागद दीयो मुनीचंद सूरी ॥ ६३ ॥ झूहा सोरठो ॥
 कागद सुं समजाय ॥ खबर एकमें दे गयो ॥ सुणजो
 सज्ज चीत लाय ॥ ढीलन की मुनीचंदसूरी ॥ ६४ ॥
 ॥ झूहा ॥ कागद जातो लीख गयो ॥ मनमां आंणी उ-
 मंग ॥ सार करसे गादि तणी ॥ उदीया पुरको संघ
 ॥ ६५ ॥ जीहां वीरुध तपायणो ॥ उपायो गुरुराय ॥ ती-
 हां आय मीलके गयो ॥ गठको राग बताय ॥ ६६ ॥
 जगतचंद्र सुरीश्वर ॥ तपा विरुध इहां पाय ॥ रांणा
 नृपत सिंहने ॥ प्रतिबोध्यो गुरुराय ॥ ६७ ॥ हेम वीमल
 सुरी ऊआ ॥ उपगारी आधार ॥ जद प्रगटी सुप्रभ
 ऊज ॥ संकट दीया सज्ज टार ॥ ६८ ॥ ताही पाट पर-
 परा ॥ हीर वीजे गुरुराय ॥ अकवरसा प्रति बोधके ॥

॥ अथ माताजीको उपासने का उपाय ॥

माताजीमें स्मरण रहे ॥ गोदायदे माता तुं पत
 उतवाल वीसो शम्भर ॥ अकलमे जाण विवेक ॥ ७
 उत्तम कुखमें जनमीयो ॥ उत्तम जानिमें होय ॥ उत्
 पद बोहीलहे ॥ उत्तम नर जग जोय ॥ ७४ ॥ उत्
 पीता ते जांणीयें ॥ उत्तम मारगे जाय ॥ उत्तम ध
 आराधतो ॥ उत्तम पुत्र कहाय ॥ ७५ ॥ उत्तम मा
 ताहिकी ॥ उत्तम मती बुधिमान ॥ उत्तम पद जग
 जलो ॥ समदृष्टीको ज्ञान ॥ ७६ ॥ उत्तम जगका मान
 वी ॥ उत्तम करे सनमान ॥ उत्तम मारग आराधतां ॥
 उत्तम होय संतांन ॥ ७७ ॥ सवेयो ॥ ७८ ॥ ताहीको
 धन्यवादे देवतजं ॥ कुखे उपज्यो रलही प्यारो ॥ जा
 गत उत्तम पुन्यही नरको ॥ दुर कीये नही होत हे
 न्यारो ॥ जगमांहे जावे तीहां सजन ॥ आस करत
 हे लोक हजारो ॥ कारण जोगे कारज ते नीपजे ॥ कारण
 वीण नही कारज प्यारो ॥ ७९ ॥ माताजीको धन्य वाद
 नीत ॥ जीणे एह पुत्र अमोलक जायो ॥ पुरुष ताको
 जनम जग देखे ॥ सुपुत्र ताके कुलमांहे आयो ॥ उत्तम

साइरही ॥ सीलजाव साइरही ॥ संतोषधार साइरसेन
 चोचीये ॥ केतवद्रीदास आस साइरकी लगीप्यास ॥
 जेतसागर जेसेकी लंगोट चोटलों चीये १ हुदा ॥
 अवधपुरी पुनि आदले ॥ आखीर कोहरऊार ॥ मेजीत
 मध्यमीलायके ॥ करता वारंवार २ मीनरासकी मोज-
 हे ॥ मोटा करेमीलाय ॥ मांनवकाइ मोकली ॥ मन
 मुरजि मावाप ३ अजव अनोखी ओपमां ॥ अरज-
 करं इनआस ॥ अवकी अवसजं वरं ॥ युं केतावद्री-
 दास ४ खजानांके आदको त्याग न करीयेहाल ॥ वाकी
 कापुनिसमजलो ॥ सुरगुरुको ततकाल ५ इती वणाक ॥

॥ अथ श्री नारीके परसंग वीपे छतीसी लीखते ॥

॥ हुहा ॥ उंकार धुरमें समरके ॥ रचुंजवांनी खेद ॥
 छिछती सीकहतजं ॥ आवजो माताजी वेद ॥ सवे-
 यो ३१ ॥ नरम वांणीकेसाथ ॥ जोमीनीजदोनुहाथ ॥
 विद्यारूपीदेवो आथ ॥ दासते जासतहे ॥ ऊबुधी को
 देवोदार ॥ सुबुधीकर दोलार ॥ संतोषको वेवुंधार ॥
 कामते नासतहे ॥ परनारी संगठोर ॥ प्रजु सेतीप्रीति
 जोर ॥ मनवेरीलावो गोर ॥ सुगुण मासतहे ॥ अरी

एकसार ॥ मेरे तेरे अन्याय ॥ संतोषे संतोषी ॥
बोले जीमरेवेनीत ॥ मामाकीत नरीनीत ॥ पादा
टाङ्गीप्रीत ॥ धन्य जगंतरी ॥ ॥ ॥ अन्यायारी एत
खाण ॥ तन धन हरे प्राण ॥ पोषिपुण सीनीपांन ॥ यम
रस सारखी कपट तो नजे नाहि ॥ हयकर प्रदेवांद
चीतवम्यो ओगमांति ॥ एते दृष्टी नागकी ॥ हसक
ताळीक्षेत ॥ रेकारो तुंकारो देत ॥ सदा तूमे र्हो चेत
देखीलेवो पारखी ॥ कहे कविजेत गुणो ॥ जेसो वा
तेसो दुणो सज्जनुमे जविजनो ॥ नारी नहीयागकी ॥ ६ ॥
आवत जावतदेख ॥ नरमनधारे द्वेष ॥ अथगुण लें
पेख ॥ दीवधारी तीनकुं ॥ कुसील न सेवो प्यारी एस
श्रीलज्या जासीथारी ॥ कुलरीत जास्यो हारी ॥ ठां
देतुंश्नकुं ॥ इम कहे प्राणपति ॥ निरमल धारोमति ॥
कहे सज्ज जन सति ॥ धन्यवाद जीनकुं ॥ भनहीक
मनमांय ॥ जेसे कुपकेरी ठांय ॥ कजंवारंवार कांय ॥
प्रीतरित कीनकुं ॥ ७ ॥ इसारा करतंजवी ॥ हसक
रहेथोजी ॥ जन सज्ज देखे तोवी ॥ नखरान ठोमती ॥
ज्वांनकुं देखआतो ॥ रंगवण्यो रातोमातो ॥ देखे वीर

हरकी ॥ संध्याकी ते जोवेवाट ॥ वेगो जम्वावे हाट
 जाटक वीसावे खाट ॥ श्रुध लेवे घरकी ॥ कहे प्राण
 पती सुणो ॥ घण मान राखो घणो ॥ करीसऊ आपाप
 ॥ मत जाणो परकी ॥ ऊ तो तोरी पगरज ॥ रऊ आठ
 पोर सठज ॥ दीख्यासऊ नीरलज ॥ मुढ मति नरकी
 ११ ॥ रुधि सिधि मेली आथ ॥ चांमनीको ठोकीसाथ
 नीरोगी को जेसे काथ ॥ मनन जाव तहे ॥ जोगी केरो
 वेस पेहरयो ॥ नारीसैं तेहज करयो ॥ चाहे जवदधी
 तरयो ॥ नारीनें चावत हे ॥ पडेजव फेरीतोनी ॥ धरमी
 नर होवे वोनी ॥ देवाज्ञाको सुख वोतो ॥ सुरकण वतहे
 ॥ कुमताको संघतज्यां ॥ प्रजु केरो नांम जज्यां ॥ हीरे
 संतोपठज्यां ॥ शीवजे पावतहे ॥ १२ ॥ रुपिधती जोगी
 जाण ॥ नारीकी ते राखेकाण ॥ जाणीरलाकी खाण ॥
 तुमेकीती वातहो ॥ मोरेहारे तोरीहार ॥ एहीजा
 व्यवहार ॥ तोने कऊं वारंवार ॥ तुमे गोता खातहो ॥
 चढचढ पमोनीचे ॥ पीस तावो पडे पीठे ॥ कामामोव
 चीत दीठे ॥ कायरकी जात हो ॥ सुणोकंत सत्यकथां
 ॥ रेकारो तुं-कारो सद्यां, नरकेगे जेद लह्यां ॥ जग सो-

गरज सरीके चोली ॥ हाथ पल दे पो चोली ॥ जंतो नारी
 जाती चोली ॥ जेद नोगे पायोदे ॥ १६ ॥ जे गनीनो प्रीती
 करे ॥ खाविंदसे नाही करे ॥ ह्मन्त ग पाय परे ॥ माया
 कीते पेटीदे ॥ नग्देखी राजी होवे ॥ फीर गुण मांसी
 जोये ॥ ग्वीण ह्मसेचीनी रोवे ॥ मन आस मेटीदे ॥ जंतो
 राखु तोरी आस ॥ मोनेमत देवोत्रास ॥ जाणो गुम
 सोदास ॥ ममताकी वेटीदे ॥ जेतकदे सुणो वात ॥ १७
 कुंकरेघात ॥ कुगती सेलीये जात ॥ शीवपुर ठंटीदे
 १७ ॥ एकहीकी एसीवात ॥ कुनारीकु जात तात ॥
 तेसज पीतामात ॥ जुनीवातां ओरकी ॥ जेसी सुणी
 सीवणी ॥ याही मेवी चार घणी ॥ तेतो नारी नीरधणी
 परीग्रह ठोरती ॥ कांमदेव केरीचेटी ॥ कपट मायाक
 पेटी ॥ हीयेकोइ नरजेटी ॥ आलस ते मोरती ॥ न
 सीखवंती नार ॥ सेव्या केइ व्यजासार ॥ एसोदेख्योअ
 एहार ॥ फेटा प्रीती जोरती ॥ १८ ॥ जेसरधीतोही जा
 ॥ फीरनही हातआत ॥ पीठेमन पीसतात ॥ नीज का
 जोव तो ॥ दीनसज वीतिगयो ॥ राते अंधकार जयो ॥
 जाणे मुजकाज थयो ॥ सूइकोरो पोवतो ॥ नजन तो

नहि ॥ नहि ॥ नहि ॥ नहि ॥ नहि ॥ नहि ॥ नहि ॥ नहि ॥ नहि ॥ नहि ॥
 नहि ॥ नहि ॥ नहि ॥ नहि ॥ नहि ॥ नहि ॥ नहि ॥ नहि ॥ नहि ॥ नहि ॥
 नहि ॥ नहि ॥ नहि ॥ नहि ॥ नहि ॥ नहि ॥ नहि ॥ नहि ॥ नहि ॥ नहि ॥
 नहि ॥ नहि ॥ नहि ॥ नहि ॥ नहि ॥ नहि ॥ नहि ॥ नहि ॥ नहि ॥ नहि ॥
 २२ ॥ नहि ॥ नहि ॥ नहि ॥ नहि ॥ नहि ॥ नहि ॥ नहि ॥ नहि ॥ नहि ॥
 जेनही जीनजांण ॥ नीरमन राजीरे ॥ जोमान सा-
 याजोन ॥ कर्ता न चणेगोन ॥ मन नही रागेगोन ॥
 ममताते जाजहि ॥ नारीनेणे शीगारी ॥ क्लेशक-
 षण्वारी ॥ समते परीदारी ॥ पड्या कापार्जहि ॥ अं-
 तकाल आवेजव ॥ आगीर उकेळोनव ॥ नागजाण
 जनसव ॥ गोमीयाकी नार्जहि ॥ २३ ॥ मग्नन कीजे-
 तन्न ॥ नीरमल राखोमन ॥ न्यायगेती जोमोभन ॥
 एहीजगरीतहे ॥ अनीती दुरेहीतजो ॥ नितीकेरो घ-
 ठजो ॥ निशिदीन प्रभुनजो ॥ साचीएही प्रीतहे ॥ पर-
 त्रीया संगप्यारे ॥ नजकर रहोन्यारे ॥ दीलमांहे
 दयाधारे ॥ नरकु उठीतहे ॥ कामरस प्रेमरस ॥ जग-
 तनें कीनोवस ॥ धरमीनर कहेसव ॥ जगची परीतहे ॥
 २४ ॥ धमक धम्मक चाले ॥ नरको वचनआले ॥

ललचावे ॥ नवो धारे याररे ॥ हस हसतां नाम
 एसो सुख नही थारे ॥ दाघेपर खार मारे ॥ ए
 नाररे ॥ कांमी जन मोह वसे ॥ फूटा जाल मांहे प
 ॥ आंख मीसी आगों धसे ॥ जेत तुं वीचाररे ॥
 ढलको ते ढली जावे ॥ पीठे मन पीसतावे ॥ गइ
 नही आवे ॥ नरां वात जांणीहे ॥ पांणी ते उतर ज
 ॥ सन-मांन नही पावे ॥ सजा मांहे हांसी थावे ॥
 दवी गमांणीहे ॥ फीट फीट होवे जद ॥ मन मांहे ल
 जे हृद ॥ जांणे अब मरूं कद ॥ एसे वज्र प्रांणीहे ॥ पे
 तोले पीठे बोले ॥ तेह नर घण मोले ॥ गुंज वात हीये
 तोले ॥ जेत केरी वांणि हे ॥ ३४ ॥ नमो श्रीहंतदेव ॥
 सुर नर सारे सेव ॥ पुजो तुम नीत्य मेव सुखको एदा
 ताहे ॥ राग द्वेष दुरे करी ॥ सुमत को दील धरी ॥ ज
 जी को चीतधरी ॥ जेसे पुत्र साताहे ॥ सिधगती
 वोई ॥ कपायको जीते सोई ॥ कर्म रज दुर खोई
 शीवपुरी जाता हे ॥ पांचुं ज्ञान वोई वरे ॥ शुक्ल ध्या
 वोही धरे ॥ शुक्ल वेश्या वोहीकरे ॥ जेत सुख पाताहे
 ३५ ॥ तमकार दुरे नासे ॥ समकीत रहे पासे ॥ मोद

श्री वीजयराग गुरी गान ॥ ३ ॥ नमो गान सणी गान
 ॥ श्रीविजय मुनीचंद्र गुरीन ॥ तेहना गुण नये वर
 ॥ प्रजुकुं नांसी जीज ॥ ४ ॥ पास प्रजुना पमाययी
 सरसे माग काज ॥ जवजल पार उनारजो ॥ रा
 बांह ग्रहानी लाज ॥ ५ ॥ तंद द्वाटकी ॥ सरस्वति माता
 संपती दाता ॥ अरज करुं करजोरु ॥ अदर समापो
 बुधी आपो ॥ तोने सेवे ठे देवकीरोम ॥ गणधर तुज
 ध्यावे शरणं चीत द्यावे ते वीध करुं तेरी सेव ॥
 सोभ वीयां भक्ते चोखे चीते ॥ ध्यावो श्रीगुरु देव ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥

पंच माहावृत धारी विघ्न वीमारी ॥ श्रीविजय मु-
 नीचंद्र सूरिस ॥ तपगठ नायक शुजगुण दायक ॥ तेहने
 नांमु शीश ॥ अष्ट मदनें जीपे चंदज्युं दीपे ॥ तेहने
 ध्यावो नीतसेव ॥ सो० १ ॥ पंच संवर राखे अधीको
 नही जाखे ॥ पाळे शुध आचार ॥ पंचसुम तीधारे कुम-
 ति वारे ॥ करता देस वीहार ॥ जीन आणा पाळे दुपण
 टाळे ॥ करता जीनपद सेव ॥ सो ॥ ३ ॥ पंच इंद्रिक्स
 राखे मीथ्या नवी जाखे ॥ चाखे जीन रससार ॥ ब्रह्म-
 चर्य जपाळे कषाय जटाळे ॥ बोळे वचन वीचार ॥ जीन

सूद ठठतो जाण ॥ पाट वेठा^{६१५}द्या पास प्रचुनें ॥ तेह
 करया वखाण ॥ श्रीसंघे सामिल उसव कीनो ॥ केत
 गुण कहेव ॥ सो० ॥ १० ॥ पाटण नगरमें पुज्य पधा
 ॥ कीनी प्रतिष्ठा सार ॥ श्रीसंघ वेंचे आनंद वधाइ
 वरत्या जय जय कार ॥ मगर-वाडेनो नाथठे तुमपेराज
 ॥ साचो मांणि जद्रदेव ॥ सो० ॥ ११ ॥ मारवार देशां
 पुज्य पधारो ॥ कजुंतुं शीश नमाय ॥ महिमां तोर
 जगमांव्यापी ॥ वध्योठे सुजस सवाय ॥ गुजर देशेतोर
 महिमा प्रगटी ॥ तुमे जग जश वास लहेव ॥ सो० ॥
 ॥ १२ ॥ शीवांणसी देसे गुरु उपदेसे ॥ यासे घणो उ
 पकार ॥ वे कर जोमी वीनवुं तेथी ॥ त्यां तुमे करं
 वीहार ॥ श्री सिंध तरस्या गुरू दरिसणना ॥ करसं
 गुरू तोरी सेव ॥ सो० ॥ १३ ॥ अरज स्विकारो मेह
 करीनें ॥ पुज्यजी श्री माहारोज ॥ आप पधार्या मो
 आनंद उपजे ॥ सरसे सघळा काज एहवी अरजी क
 रुतुं तुमनें ॥ वार वार नीत्यमे ॥ सो० ॥ १४ ॥ संक
 डंडु अंक पीठांणो ॥ सागर वन्हीदयो जीरु ॥ माहासु
 दसमी दीन अरज करेठे ॥ जेतो वे कर जोरु ॥ एदे

पधारे पुज्यजी ॥ एहीज मोने नार ॥ ५ ॥ दसमो
 र्थकर सोनतो ॥ चैत्यनण्यां वक्त नारी ॥ सीतल ना
 दील मोहतो ॥ श्री मंचने सुगकारी ॥ ६ ॥ नाको
 पार्श्व दीपतो ॥ मेवा भगमां जाण ॥ परत न देवदे ज
 गतो ॥ सबल मनाइ आण ॥ ७ ॥ छती पट वारी व
 राजकृत वीनती संपुर्ण सं १९७९ का श्रावण सुद ३६
 ॥ जेत सागर ॥

॥ अथ श्री भावद्रप गच्छके श्री पुज्यजी माहाराज श्री श्री श्री १०८
 श्री श्री जीन फुलेंद्र गुरीस्वर के गुणानुं वाद स्तुती प्रारंभे दुहा ॥

सरस्वती सांमण वीनवुं ॥ अरज करू चीतलाय ॥
 गुरू तणी वीनर्ता करुं ॥ सुबुधी दे संमाय ॥ १ ॥ सुग-
 रू सुधर्म आदरो ॥ कुगुरू कुदेवको तंरु ॥ रिधिबुधि
 रहजो सदा ॥ होज्यो धर्म अखंरु ॥ २ ॥ हे जवीयण
 तुम सांजलो ॥ वीनय धरी चीत लाय ॥ श्री माताके
 परतापसुं ॥ वीघज दुर पुलाय ॥ ३ ॥ माता मोपे मे-
 हरकर ॥ संकट करजे दुर ॥ सुण होजे इश्वरी ॥ बुध-
 दीजे नरपुर ॥ ४ ॥ गुणगीरू आंना गावसुं ॥ सुणजे
 मात संमाय ॥ श्री संघको आणंद करो ॥ वीघज दुर
 पलाय ॥ ५ ॥

(७६)

इ नही थाए ॥ कऊं तुं कर जोकरे ॥ राहै करी मा
 उपर गुरुजी ॥ अष्ट कर्मकुं तोकरे ॥ अ० ॥ ३ ॥ तुम तो
 गुरुजी नीर्मल सागर ॥ हुंतो महीनी जोकरे ॥ तुम तो
 वीरहो न खमावे गुरुजी ॥ जीममही जल ठोकरे ॥ अ० ॥
 ॥ ४ ॥ शीश मुगट सम प्यारा गुरुजी ॥ मस्तकनां जीम
 मोकरे ॥ एहवाथे गुरुजी प्यारा मोनें ॥ कऊं तुं मान
 मोकरे ॥ अ० ॥ ५ ॥ तुम जो नेहा तोमो ठो स्वामी ॥
 अण वीचारयो म तोकरे ॥ खांमीमो में देखो स्वांमी ॥
 ॥ तो तुमें दीजो ठोकरे ॥ अ० ॥ ६ ॥ अवमें गुरुजी शर
 णां रोचाकर ॥ मत कोजो ओ रांकी होकरे ॥ शीष्य
 अवगुण देखके स्वांमी ॥ तुरतही दीजे ठोकरे ॥ अ० ॥
 ॥ ७ ॥ एती अरजी सुणके गुरुजी ॥ मतयो मुख म
 कोकरे ॥ रत्न अमोलख आपने दीठा ॥ अव कैसे दे
 ठोकरे ॥ ८ ॥ संवत चंद्र ग्रहकुं जांणो ॥ ठासठ केरी
 जोकरे ॥ अरजी तुमपे कहं तुं स्वांमी ॥ पुरो वंठी
 कोकरे ॥ अ० ॥ ९ ॥ इती गुरु वीनती समाप्त ॥

॥ अथ वीरजी स्तुती ॥

सकल संगल सुखदायक सदगुरु ॥ सुमती गुप्ती च

॥ जगत् जे जगत् जगत् जगत् ॥ जगत् जगत् जगत् ॥
जिने जगत् ॥ जगत् जगत् जगत् जगत् ॥ जगत् जगत् ॥
जगत् जगत् जगत् जगत् ॥ जगत् जगत् ॥ जगत् ॥

जीन प्रतिमां जीन मगीगी जागी ॥ नीणग आ
गन सारगी ॥ जगत् जगत् जीन नीणग जीनो ॥ गंगा को
न राखीरे ॥ सु० ॥१॥ जात जगत् प्रीमा देगी ॥
॥ लायो मय प्रेम ॥ मान पीताकं तांसी नीकम्पो ॥
राजकुं दीनो लागरे ॥ सु० ॥२॥ तांणीगेमं नार नीणग
॥ बोदया श्री माहावीर ॥ नोया अंगे नोदया अतीसय ॥
तुमे मनसां राखो भीर रे ॥ सु० ॥३॥ ज्ञानाता अंगे द्रो-
पदी पुजी ॥ जाणो सतर प्रकार ॥ जगत् अंगे वीरा
चारण ॥ नमन क्रीया करी सार रे ॥ सु० ॥४॥ सातमे
आठमे अंग संजावो ॥ शत्रुंजयनो अधीकार ॥ गीर-
नार शीखरजी सवही बोले ॥ केड तखा नरनारे
॥ सु० ॥५॥ प्रश्न व्याकरणं हंसा पाठे ॥ जीन पुजा न-
ही वरजी ॥ इस जांणी तुम जक्ती करो शुच ॥ द्रव्य
जावको सरजीरे ॥ सु० ॥६॥ उवाड उपांगे नगरी वरणी ॥
जीन मंदरसुं सोजे ॥ इस अनेक जाव सृणो तुम ॥ मत

वज्रव वधावेरे ॥ सू० ॥ १५ ॥ पाठ चोरणो फूठ वा
 लणो ॥ ईणसें व्रत जो दुजो जागे ॥ आंटावेनी दुसे-
 लनें ॥ अर्थ कहो तुम सागेरे ॥ सु० ॥ १६ ॥ अर्थ
 उथापो आपमत थापो ॥ एह नही मुनी आचार ॥ पांन
 माहाव्रत नीश्वे जागे ॥ जद् आश्रव लागे लाररे ॥ सु०
 ॥ १६ ॥ पंक्ति तेही कही जे साचा ॥ ग्यांन क्रीया
 दातार ॥ फूठमांहे ते पाप वतावे ॥ वोले वचन वीचा
 रे ॥ सू० ॥ १७ ॥ इसही आगम वोले ठे तो ॥ सान
 मांन जो एह ॥ राग द्वेषको कांम नही ठे ॥ मीठमी
 दुकर तेहरे ॥ सू० ॥ १८ ॥ संवत्त उगणीसे वरस ती-
 उनरे ॥ सुहदे माघज मास ॥ अष्टमीके दीन जोम
 वणाई ॥ पुरो प्रभुजी आसरे ॥ सू० ॥ १९ ॥ सेर वाजो
 नगे दीपनो सने ॥ श्रावके सजा वणाई ॥ चोय मुनी
 न चरचा करके ॥ प्रगट लावणी गाइरे ॥ सू० ॥ २० ॥
 गीतजनाथजीनणेषु प्रासादे ॥ सेरवा लोत्रा मांढी ॥
 मांढीनटकी आग्यावेके ॥ जेते मसल रचाइरे ॥ सु०
 ॥ २१ ॥ छी श्री चोयमलजी की चरवाणी समाप्त ॥

नली मनी गगन ॥ सोन दात रंश रणराजो नरा ज द मय
 लामे लामे ॥ म० ॥ ३ ॥ सोन दाती रंश रणराजो नरा ज द मय
 जैन रंशको देपी ॥ चाप मर दा न मय कोरे ॥ म० ॥ ४ ॥ रमिज सोन
 देसीरे ॥ म० ॥ ५ ॥ पथरी मायों दा न मय ॥ वे पात हरो सो
 साची ॥ तेहनी वर सोन पाणी करजो ॥ वे नवाना भागी भागीरे
 ॥ म० ॥ ६ ॥ गानी मायां जीवन देसी ॥ वे वांतनो नांम पामे ॥
 ते तो चेतन लगणी वाजे ॥ दूर केम नही पावेरे ॥ म० ॥ ७ ॥ गाय
 गोथाको संग भयो जद ॥ दूर पडी नो पाजे ॥ दोनां मांझी दुण
 हे उत्तम ॥ अर्थ कटो तुम मागेरे ॥ म० ॥ ८ ॥ प्रभुजी गाय प्रमाण
 जाणो ॥ गोथा समजो ध्यांनो ॥ स्याद नादकी देह देखलो ॥ मां
 मन तो मांजीरे ॥ म० ॥ ९ ॥ गाय तो अमृत दूरको देवे ॥ जीनजी
 देवे मुक्ती ॥ मुल टीकाने चुरणी जोयो ॥ ओर देखो नीर युक्तीरे
 ॥ म० ॥ १० ॥ उतनी वान मुनीराज सांभली ॥ जोरमुं बोल्या बटकी ॥
 सिंह पथरको वण्यो अनोपम ॥ वेहद गाय अति पटकीरे ॥ म० ॥ ११ ॥

॥ दुहा ॥ सिंह पथरको देह वण्यो ॥ वेठो दीसे जोध ॥ मांणस
 को ते मारे नही ॥ कांहां गयो वो क्रोध ॥ १ ॥ एसी चतुराड केली
 बात वणाइ हद ॥ जेते मनमां धारके ॥ मुनीमु बोल्यो जद ॥ २ ॥
 सिंघ नारकी थापना ॥ तेनो नाम कहो बतलाय ॥ तेमां चेतन पण
 नही ॥ कीमते सिंह कहवाय ॥ ३ ॥ पशुनी थापना मांजी तुम
 जीनजीकी मानो नांय ॥ तीण सुवेर थाके ऊओ कदे ॥ सो संव
 नाम बताय ॥ ४ ॥ कमटा मुरनां केह हो ॥ के गौसालाना पुत्र
 कीम उथापो जीन राजने ॥ इम नही वाजो सपुत ॥ ५ ॥

ओर न आवे काम ॥ थारी मारी संग नही चले ॥ पछे हीवडेरेसी
 हांम ॥२॥ मेंतो वात सवी सरदऊं ॥ नही भाखुं एकंत ॥ दांन सील
 तप भावना ॥ ए चारामें नही भ्रांत ॥३॥ स्याद बाद मत जीन रा-
 जनो ॥ सो सत्य विचारी जोय ॥ मिश्या वचन परूपतां ॥ प्रांणी ते
 परभव दुखीयो होय ॥४॥ तव ऋषिजी प्रकासीया ॥ मुणजो सा-
 वध वात ॥ पांणी फुल चढावतां ॥ जीवानी होवे घात ॥५॥ धुं
 दीपनैवद्य करो ॥ फीर पुजो नव अग ॥ प्रभुनी ग्रंथी ते कीम करे ॥
 सावद्य कामनो संग ॥६॥ प्रभुजी मुक्त पधारीया ॥ ते नाम राखो
 नीरधार ॥ तेह भावगुं समरण करो ॥ ज्युं उतरे पेडा पार ॥७॥ इतनी
 वात जेते सुंणी ॥ मनमां समज्यो जेह ॥ इणे तो मत ए पकड लीयो
 ॥ तांणत नावे छेह ॥८॥ तव जेतो मुनीको कहे ॥ मुणजो ये मुनी-
 राज ॥ हिंस्यामें धर्म परूपीयो ॥ इसडो कऊं इलाज ॥९॥

॥ ढाल ३ जी देशी चोपाइनी ॥ साधु देशमें करे वीहार ॥
 गमन करीनें लावे आहार ॥ इर्या पालत त्रस जीव हणाय ॥ तेमां पीण
 कीम धरम कहवाय ॥१॥ वरसत मेहमें स्थंडिल जाय ॥ तेरिंदी तेरिंदी
 जीव हणाय ॥ नदी उतरतां पापज थाय ॥ धीमे धीमे उपाडे पाय ॥२॥
 आर्या नदीमें तणाती जाय ॥ साधु देखतही नीकाले आय ॥ तीणमें
 धर्म पीण कळो जीनराय ॥ जीवतो तेमां असंख्य हणाय ॥३॥ उमह
 जीन प्रतिमां पुजाय ॥ तेमां समकीत गाढो थाय ॥ सावद्य काम तुम
 नाम वताय ॥ भोला लोकानें तुं मत भरमाव ॥४॥ भल अभक्षने
 करो वीचार ॥ कृत्य अकृत्यने ल्यो मनधार ॥ आपापक्ष
 छोडो मती ॥ तो याजो साचा समकीती ॥५॥ घरमें आं

तो खरचत द्रव्य अपार ॥ २ ॥ भाव वंदन मेतो सरदही ॥ द्रव्य
माने नाय ॥ ए हंचा कांममे सरदहो ॥ तामे धर्मज नांय ॥ ३ ॥ इ
वात मुनीराज कही ॥ तव जेतो बोल्यो आय ॥ अठ वातको भा
तां ॥ थारो समकीत एलो जाय ॥ ४ ॥ मुनी तो सावद्य त्यागीयो
तीमहीवे श्रावक जांण ॥ तीणमुं पुजा नवी करे ॥ पीण वांदण रं
कीयो परीमांण ॥ ५ ॥ अरीहंत प्रतीमां जीन चैत्यवीण ॥ अवर की
पच्छखांण ॥ गुरुगुरु मुदेवने वांदतां ॥ मनमां समकीत आंण ॥ ६ ॥

॥ ढाल ४ थी ॥ देशी ॥ नणदलरी ॥ जेतो कहे तुमे मां
लो ॥ मनमां मुधबुध जाणहो ॥ मुनीजन ॥ साधुजी पुजा कीम कां
सावयना कीया पच्छखांणहो ॥ मु० जेतो कहे तुमे मांभलो ॥ श्रा
दम तेवीरनां ॥ पडीमा धारी जांणहो ॥ मु० ॥ तीणेतो समकीत उलयो
नचही कीयो प्रमाण हो ॥ मु० जे ॥ २ ॥ अन्य देव वंदु नही ॥ तंदु भरी
चैत्यहो ॥ मु० ॥ मीश्यान्नी चैत्ये जीन मुरती ॥ ते नही वंदण जोग
॥ मु० जे० ॥ ३ ॥ वंदनमे दोषतो कोउनही ॥ पीण व्यवहार था
फोर हो ॥ मु० ॥ जीम गुरुवा वारो रणा केवली ॥ नही वंदे मुन
ओहो ॥ मु० जे० ॥ ४ ॥ तीमही व्यवहारने ओळखतो ॥ जीम
वीर साहो भाय हो ॥ मु० ॥ वंदण पुजण कीरतना ॥ पछही क
पछही ॥ मु० जे० ॥ ५ ॥ चोरीगनांम पाठ छे ॥ वंदीय मति
॥ मु० जे० ॥ ६ ॥ कर्म कर्मवे अनु मोदवे ॥ वेदनो मरीपा कळ
॥ मु० जे० ॥ ७ ॥ सावयनां काम प्रवृत्तगीया ॥ न
॥ मु० जे० ॥ ८ ॥ चार नीपेया प्रवृत्तगीया ॥ न
॥ मु० जे० ॥ ९ ॥ द्रव्य भाव नाम थापना ॥ मु०

तांणमें थाए धरम कावरोरे ॥ एम नही वाजो सुपात ॥ ए० म० ॥
 मीथ्या ते समकीत नहीं रे ॥ व्रतकुं पोछे बात ॥ व्र० म० ॥ जेन धर्म
 ति उजलोरे ॥ मेलो नही तीलमात ॥ मे० म० ॥ १ ॥ जीन प्रत
 जीन सारीपीरे ॥ इसडी कहो तुमे वात ॥ इ० म० ॥ साचेंमे सम
 वसेरे ॥ व्रतनी वेल वधजात ॥ व्र० म० ॥ ३ ॥ पचा पचीमें
 मेरेरे ॥ ते तो मुठ गीमार ॥ ते० म० ॥ जीहां नांम तीहां थापनारि
 जांणे सयल संसार ॥ जां० म० ॥ ४ ॥ जेहको समरण कर रवारें ॥ ते
 नंदो केम ॥ ते० म० ॥ जीनालय सूत्रे भण्यारे ॥ तुमही मानो एम
 तु० म० ॥ ५ ॥ श्री वीजयमृनीचंद्रसूरी स्वरूरे ॥ तास पसाए ज
 ॥ ता० म० ॥ जेतो समकीत उछरे रे ॥ सूत्रनो वचन प्रम
 ॥ सु० म० ॥ ६ ॥

॥ दुहा ॥ समकीतसुं मुक्ती मीले ॥ इम भाग्यो जीनगज ॥
 मुहरत जेणे फरसीयो ॥ तेहना सजि काज ॥ १ ॥ इम जांणी श्रोता
 सुणो ॥ आलश अलगो मेल ॥ थारी मारी अव मत कगे ॥ साजो मा
 शेल ॥ २ ॥ मार्ग केड प्रकारनां तेहना केड वीचार ॥ पीण सुध मार
 जीन राजनो ॥ तेहने ल्यो मन धार ॥ ३ ॥ कुलयुग आरे पांचमे ॥
 पाखंडी लोग ॥ अपणो पंथ जमायके ॥ फीर साधण लागा जोग ॥
 पीण तेहमां जे गुण होवे ॥ एक एक प्रधान ॥ तेहना गुण हवे सांभलो
 श्रोता थड मावधान ॥ ५ ॥

॥ ढाल ६ छी ॥ राग धन्यासी सींधुर ॥ शत्रुंजय उ
 नांतलो ॥ ग. देशी ॥ जेन धर्म अति दीपनो ॥ नीरमल गंग प्र
 णोजी ॥ नीणमां मन पीण वद्द हुवा ॥ तेहनो मुणो अनुमानोनी

(२०)

तेहनी एदणा भारीजी दोष घणा ते टालने ॥ लेवे छे आहार
वारीजी ॥ भी० ॥ १४ ॥ साधुपणो कोड आदरो ॥ तो आहारनी पुर्त
एहजी ॥ आहार शुद्ध करतो प्राणीयो ॥ भवनो अंत करे जेहजी ॥
॥ भी० ॥ १५ ॥ सिथलाचार्य प्रति वृजतां ॥ कर्मनी कीयो तब अनं
जी ॥ जीभनो रस जब छोडीयो ॥ तब करम हुआ भय भ्रांतोजी ॥
॥ भी० ॥ १६ ॥ एकोत्ते तेरापंथीनो ॥ बोले एकज वातोजी ॥ आय
मरोडी उथापीया ॥ पीण न करे दुजी वातोजी ॥ भी० ॥ १७ ॥ पात्र
णमे सामरथ कोड नहीं ॥ पीण बोलणमें अती ताताजी ॥ गुठ भाग
न डर रखे ॥ कष्ट मायामें अती राताजी ॥ भी० ॥ १८ ॥ पी
साधु कहे ते सत्परपे ॥ न करे खंचा तांणोजी ॥ तीम एको तु
राखजो ॥ कीजो जीनजीना वचन प्रमाणो जी० ॥ भी० ॥ १९ ॥ त
गळ नायक राजना ॥ श्री विजय मुनीन्द्र मुरीसोजी ॥ तीण प्रमा
जेसे पोलीयो ॥ दगा गगरनो शीघ्रोजी ॥ भी० ॥ २० ॥ संत
गमीमे निद्राने ॥ जेष्ठ सुद् चउदस जाणोजी ॥ मेर वालों न
वं काम ॥ गोविंद नाथ चीत बाणोजी ॥ भी० ॥ २१ ॥ कलश
मग साधा गरम गरमकीत गाढो धाणे ॥ गु० ॥ मुक्ती मार्गनो मे
गतये ॥ गु० ॥ साधु मार्गनो राग देखावे ॥ गु० ॥ जन धर्मनो म
जाये ॥ यम दुःख व्याख्या सकल ॥ जैन सागर उगार कहे ॥ जै
का ॥ योग दापावा ॥ त्याग लाय मोक्षा लहे ॥ जीव योगि
का ॥ योगी श्री रामायण पट हालीयो संगुण ॥

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ ॐ ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

धरी उवरी दत्त ॥१॥ च्यार अनुंतर नामे द्वार ॥ उच्चत अष्ट जोयण
 विस्तार ॥ पंचसया धणु तीहां वेदीका ॥ लीजे सत्रि जोयण देविका
 ॥ २ ॥ ए छ कुलगीरछे जंबु मजार ॥ सातभो मज्ज मेरु वनधार ॥
 क्षेत्र बली सात तिहां आद्यंत ॥ भरत तणी सीमा हीमवंत ॥ ३ ॥ जे
 भरतनुं जोयण परीमाण ॥ पांच छे छवीस छ कला जाण ॥ बीजा
 क्षेत्रतणो अधीकार ॥ लेयो शास्त्र थकी मुविचार ॥४॥ दक्षग भरते
 लंकानो देश ॥ नही रोरव बली नही कलेश ॥ अवर देश पण
 परखीये ॥ एतो मणी सम लखी हरखीये ॥ ५ ॥ नगर एक
 माहिंद्र पुर नांम ॥ चौहत चौरासी दीपे जाम ॥ व्यापरी त्यां
 करे व्यापार ॥ वस्तु गीगतां नवी पांढुं पार ॥ ६ ॥ खांड कोपरा
 दाख निदाम ॥ लविंग जायफल मेवा जाण ॥ कीरीयाणानो नही
 सेहन पार ॥ व्यापारी वेढा वाजार ॥ ७ ॥ नगर महेंद्र पुर मोटो जा-
 ण ॥ दिपे जेहवो देव बीमांन ॥ देव पुरी लाजे तीहां गरी ॥ महेंद्र
 पुरनी देखी सवो रूअडी ॥८॥ गढमढ मिंदर पोल पगार ॥ जाली
 गोख तणो नही पार ॥ देखे गुंदर अति रूअडी ॥ थरथर गोखे उभी
 खडी ॥९॥ जाणे रंभा देव कुमार ॥ नव जोवनां भरते नार ॥ ओढी
 रंग तणी चुनडी ॥ जाणे विधाता हाथे घडी ॥१०॥ एसो नगर महेंद्र
 पुर जाण ॥ जैन धरमनी ते माने आण ॥ धर्मि नरते वसे सहुकोय ॥
 धर्मथो शीवमुख निशे होय ॥११॥

॥ दुहा ॥ एसोइ धर्मि राजीयो ॥ महेंद्र चेन तस गांम ॥ न्याय-
 वंत नृप सोभतो ॥ जाणो राजा रांम ॥१॥ प्रजा पालतो नीत रहे ॥
 भोगवे भोग रसाल ॥ दो गंधक जीम मूखे रमे ॥ जाणे देवकुमार

ए ओलखासे सही कर तुम तणी जातडी ॥ हुइ पुत्री गुण राज ताह
 कुखमें ॥ सुगरांणी एहवी वांण पडी सायर दुखमें ॥ ४ ॥ रद
 सुंदरी तव नार आंसु ढलकावती ॥ बोले गदगद साद मुखे विलख
 वती ॥ सखीयां उभी पासके सहु समजावती ॥ मुखधरे अमृतनी
 के मंगल गावती ॥ ५ ॥ क्युं रोड रांणी आपके कहो चातुर तुमे ।
 पुत्रीनो मोटो कलंक के माइत कीम खमें ॥ प्रथम पुत्रीनो लाड के
 माता घणो ॥ पछे पडे वीरह वियोगते तुमे सहीयां सुणो ॥ ६ ॥
 भर जोवनमें चिंता ते उपजे अति घणी ॥ वर जोवाने काज करे मे-
 नत घणी ॥ परण्या पुठे निशदीन रहे धीया सासरे ॥ धीमे बोले
 मुखवेंण पीउडानें आचरे ॥ ७ ॥ परण्या पीछे नाथके फीर माने
 नहीं ॥ अथवा होय पतिहीनके चिंता ते सही ॥ कुख वंध्या जो होय तो
 दुख बाधे घणुं ॥ तीण दुखथी हीयो कंपे सही रांणी तणुं ॥ ८ ॥ ए दुख
 पुत्रीनां जाणके रांणी वीलखी थइ ॥ जोवो मात स्नेह तुमे सऊ रही रही
 ॥ इम जांणी माया जाल धर्म हीये धारजो ॥ जेतो कहे सुखदाय
 वचन हीये पालजो ॥ ९ ॥

॥ दुहा ॥ पुत्री जनमी तीण समे ॥ वाज्या ढोल नीसांण ॥
 सुपड मोटो मंगाइने ॥ दाइ करे वीधान ॥ १ ॥ दासी दोडी मेलसुं ॥
 आइ राजाके पास ॥ पुत्रीनी कहे वारता ॥ मुखसें थइय नीरास ॥ २ ॥
 राजा मनमे हरखीयो ॥ दीधी वधाइ सार ॥ एक थइ मुज कुंवरी ॥
 दोय कुंवर अवधार ॥ ३ ॥ मनमां ते राजी हुआ ॥ वीता दीनदस जांम
 कुटुंबनें सहु संतोपीया ॥ घणां करी पकवान ॥ ४ ॥ न्याति गोत्र
 जीमाइने ॥ राजा कहे सीरनांम ॥ मुझ कुले कुंवरी अवतरी ॥ देस

जो ॥ सोवन मुद्रा ओषे कुंवरीना कर मध्येरे लो ॥ हां० ॥ भणी गुणीनें
थइ सर्व कलानी जाणजो ॥ अपमरने अणु हारे मुरनर मोवतीरे लो
॥ हां॥ ७॥ दीन दीन वाधे चंद्र कला जीम बालजो ॥ आप स्वभावमें
रमती कुंवरी अंजनारे लो ॥ हां० ॥ जेत सागर कहे सांभलो वीजी
ढालजो ॥ जीन आंणा मुध जांणी भवि तुमे पालजोरे लो ॥ हां० ॥ ८॥

॥ पुहा ॥ मुध बुधि अध्यापके ॥ कुंवरी भणावी जेह ॥ मिथ्या
मत दुरे करे ॥ धर्म रागणी देह ॥ १॥ एकज सता विधिनय ॥ काल
त्रण गति चार ॥ अस्ति काय पांचे छप् ॥ द्रव्य सात नयधार ॥ २॥
आठ कर्म नवतत्व तीस ॥ दसवीध मुनीवर धर्म ॥ पडीमा अग्यार
वार व्रत ॥ जाणे एहीज मर्म ॥ ३॥ मुलुतर कम्म पयडी ॥ दशत
अठावन ॥ कर्म हेतुना बंध पीण ॥ जाणे सतावन ॥ ४॥ बंधह उदय
उदीरण ॥ जाणे सतातेह ॥ मुहम वीचार सव्वे लहे ॥ प्रवचन
भाण्या जेह ॥ ५॥

॥ ढाल ४ थी ॥ इंरु आंवलरीरे ॥ इंरु दारुम डाव ॥
ए देशी राग मलार ॥ सुंदर अंजनां सुंदरीरे ॥ जोवन पोढती
जोर ॥ भणी गुणी सगली कळारे ॥ चतुर पणे चीत चोर ॥ चतुर
नर जोयो कर्म विशेष ॥ कर्म लढीये कळि अशेष ॥ पुण्ये लढीये
प्रभुता पेय ॥ वारु पुण्य तणा फल देव ॥ च० ॥ जो ॥ २ ॥ रूपंत
गुण आगळीरे ॥ विद्या प्रभुता सार ॥ मदना कारण छे सहारे ॥ पीण
मदन कर लीगार ॥ च० जो० ॥ ३॥ इक दीन अभ्यंतर मभारे ॥ वेठो
गय उल्लाम ॥ बोलावे गयजी नीज सुतारे ॥ साथे पाठक ताम ॥ च०
जो० ॥ ४॥ वीनय वनी नीज तावनेरे ॥ आची कीध प्रणाम ॥ मंकीत

लरे ॥ चतुर नर ॥ विद्या धर ते राज वीरे लाल ॥ वीद्यामां भरपुर ॥
 १ ॥ च० ॥ देश मनोहर लंकनारे लाल ॥ रावण अध चक्री जाणरे ॥
 च० ॥ राजधी सऊ विद्या धररे लाल ॥ रावगनी मांने आणरे ॥ च०
 दे० ॥ २ ॥ ते ग्रहलाद नांमे राज नेरे लाल ॥ केतुमती रांणी जाणरे
 ॥ च० संसार भोग ते भोगतारे लाल ॥ मुर सरीपा नर जाणरे ॥
 च० दे० ॥ ३ ॥ इम वीचरंता रहे सदारे लाल ॥ सुखमें रांणी मही
 पालरे ॥ च० इम करतां इक दीन रयेरे लाल ॥ रांणीनें आयधानेरे
 ॥ च० दे ॥ ४ ॥ केतुमतीनी कुखे उपनोरे लाल ॥ जीवते एक
 पुन्य वांनरे ॥ च० जेदीनधी सुख पामर्तारे लाल ॥ रांणी धरे शुभ
 ध्यानरे ॥ च० दे ॥ ५ ॥ इम करतां दीन वही गयारे लाल ॥ पुरा
 नव हुआ मासरे ॥ च० ॥ सात दीवस उपर थयारे लाल ॥ हवे पुरछे
 मन तणी आसरे ॥ च० दे ॥ ६ ॥ पुत्रनो जनम थयो सुखरे लाल ॥
 सुखे प्रसव्यो माय आपरे ॥ च० दे ॥ दाशी दीधी वधामणीरे लाल ॥
 नासी गया सऊ पापरे ॥ च० दे ॥ ७ ॥ राजा मन हरयो घणुरे
 लाल हरख्या रांणो रांणरे ॥ च० दे वाजा वाजे अती घणारे लाल ॥
 ढोल थाल कंसालरे ॥ च० दे ॥ ८ ॥ जाचक आया पुकारतारे लाल
 ॥ राजा देवे दांनरे ॥ च० दे ॥ नाटकीया नाटकरकरे लाल ॥ पावे
 बहु सन मांनरे ॥ च० दे ॥ ९ ॥ इम करतां बहु भांत सुरे लाल ॥
 नाना वीध उछरंगरे ॥ च० पंचम दीन नवरावतारे लाल ॥ नीर्मल
 नीर ते गंगरे ॥ च० दे ॥ १० ॥ इम करतां दीन दस हुआरे लाल ॥
 मनमां आंणी उमंगरे ॥ च० ॥ जेतो मुखसैं इम वदेरे लाल ॥ दीनदीन
 थाए उछरंगरे ॥ च० दे ॥ ११ ॥

लो ॥४॥ मीठी वांणीए इम वदेरे लो ॥ मामां वचन वीचार ॥ गळे
 लपटी जतोरे लो ॥ जीम जीम हरजे मातजीरे लो ॥ कांड कोमल
 वचन वणाय ॥ आडो करे मातसुंरे लो ॥५॥ बालक उपर मायनोरे
 लो ॥ कांड हेज तणो नही पार ॥ काया जुदी जाणजोरे लो ॥ जी-
 णरा मोटा भाग्य छे रे लो ॥ तीण घर एसा पुत ॥ दुजा सहु वांजी-
 यारे लो ॥६॥ आदित्यपुर अति सोभतोरे लो ॥ कांड प्रह्लाद नाम
 भूपाल ॥ तिणे कुळे अवतरयोरे लो ॥ जननी जणे तो एसे जणेरे
 लो ॥ कांड के दाताके मूर ॥ नही तो भली वांझणोरे लो ॥७॥ कुल
 कपुत जणी करीरे लो ॥ कांड मतीरे गमावे नूर ॥ मुणो सहु नारी-
 यारे लो ॥ पवनजी कुमार मोटा हुवारे लो ॥ कांड वरप पांचनां
 जाण ॥ कला लघु केलवेरे लो ॥८॥ मात पीता तव नीरखतारे लो ॥
 एतो करता बात विनोद ॥ विद्या हवे सीखवोरे लो ॥ तप गछनों ए
 राजवीरे लो ॥ कांड विजय मुनीचंद्र मूरीस ॥ जेतानो शीर सेव-
 रोरे लो ॥ ९ ॥

॥ दुहा ॥ वरस सातनो तव थयो ॥ पवनजी नामें कुमार ॥ मा-
 ता कहे इणपर सही ॥ सुणो सजन परीवार ॥ १ ॥ कुमार नैसाले
 मोकलो ॥ विद्या भणवा काज ॥ एह बात श्रवणे सूणी ॥ तव बोल्या
 माहाराज ॥ २ ॥ माता वेरी जांणीये ॥ पीता जो शत्रु जाण ॥ विद्या
 न पढावे बालने ॥ ते नर जाण अजाण ॥ ३ ॥ इम कही राजा सज थयो ॥
 पुत्र भणावे सार ॥ विद्या भणवा मोकलो ॥ एहवो करयो वीचार ॥ ४ ॥
 मुहरत चोखो देखाडीयो ॥ जोतपीयानें पास ॥ कुंवर भणी जसी
 अती भलो ॥ हीवे पुर छे वंछीत आस ॥ ५ ॥

आदीत्य सेरमेंरे लो ॥ तिहां प्रहलाद नांम भूपालरे सु० मंत्री मनमां
 चितवेरे लो ॥ १ ॥ रूपवंत अंजनां वालरे ॥ सु० सरीपो वर एहने
 जोवसुरे लो ॥ पवनजी कुमार मुकुमाररे ॥ सु० मं॥ २ ॥ इम चितवतो
 मारग वहेरे लो ॥ पोहतो आदित्य सेररे ॥ सु० ॥ राय प्रहलादनें
 भेटीयोरे लो ॥ धन्य धन्य मोटे भागरे ॥ सु० मं० ॥ ३ ॥ मणी मांगक
 मोती हीरलारे लो ॥ भेट कीया तत खेवरे ॥ सु० ॥ राजा मन हर-
 पीत हुबोरे लो ॥ जीम भोग मील्यांथी देवरे ॥ सु० मं० ॥ ४ ॥ जाय
 उत्तारया मेलमेंरे ॥ ते सात भुवन आवासरे ॥ सु० ॥ आगत स्वागत
 करे घणीरे लो ॥ भोजन भात स्यावासरे ॥ सु० मं० ॥ ५ ॥ दुजेदीन ते
 रायजी रे लो ॥ वेठा सवातो जोडरे ॥ सु० ॥ मंत्री आयो तिहां मल
 पतोरे ॥ अरज करे कर जोडरे ॥ सु० मं० ॥ ६ ॥ मंत्री कहे मुंणो राय
 जीरेलो ॥ एकतो मुज अरदासरे ॥ सु० ॥ पेटी महिंद्र रायनीरे लो
 अंजना नांम उदाररे ॥ सु० मं० ॥ ७ ॥ सोले वरसामें सा थदरे लो ॥
 भर जोवनमां जाणरे ॥ सु० ॥ रूप लावण्य गुणे आगलीरे लो ॥ चतुर
 वीसक्षण तेहरे ॥ सु० मं० ॥ ८ ॥ तेहनां सगपण कारणेरे लो ॥ हुं
 आयो तुम पासरे ॥ सु० ॥ वचन नीर्वाहो हीवे माहरोरे लो ॥ सफल
 हुवे मुझ आसरे ॥ सु० मं० ॥ ९ ॥ कुंवर पवनजी ताहरेरे लो ॥ वरप
 पचीसमां जाणरे ॥ सु० ॥ तेहने देवां छे अंजनारे लो ॥ लग्न सहीकर
 मानरे ॥ सु० मे० ॥ १० ॥ तपगल नायक सोभतोरे लो ॥ श्री विजय
 मुनीचंद्र मरी रायरे ॥ सु० ॥ जेतो कहे ढाल आठमीरे लो ॥ सांभल्या
 आणंद धायरे ॥ सु० मं० ॥ ११ ॥

॥ दुहा ॥ हेम जडीत मंडावीयो ॥ श्रीफल जांणो एक ॥ कुंवर

नार ॥ मनमां वीचारे पर भवेरे ॥ ए होजो सुझ भरतार ॥ सु० जो०
 ॥ ९ ॥ इण प्रस्थाने चालतारे ॥ नगर महेद्र पुर जाय ॥ महेद्र भूपन
 वधामणीरे ॥ वन पालक दीनी आय ॥ सु० जो० ॥ १० ॥ राय सुंणी
 मन हरखीयोरे ॥ लीनां वधाइ जाय ॥ तोरण आया पवनजीरे ॥
 देह्यांथी मृप थाय ॥ सु० जो० ॥ ११ ॥ गोरीयां गावे गीतडारे ॥
 मंगल सुखनें काज ॥ सवरी आया पवनजीरे ॥ वरत्या जयजय कार ॥
 ॥ सु० जो ॥ १२ ॥ तपगच्छ नायक राजतोरे ॥ श्री बीजे मुनीचंद्र सु-
 रीक्ष ॥ तास पसाण जेतो बोलतोरे ॥ दया सागरनो शीष्यरे ॥ सु०
 जो० ॥ १३ ॥ नवमी हाळे हलकतीरे ॥ आइ सहीयां साथ ॥ अंजनां
 मुंदरी तीण सोंमेरे ॥ जोड्यो पवन सुं हाथ ॥ सु० जो ॥ १४ ॥

॥ दुहा ॥ करमे लावो जवरमुं ॥ जोसी करायो जाण ॥ कुमार
 मन भीनो नही ॥ पुरय पुन्य प्रमाण ॥ १ ॥ हरखन आयो एरने ॥
 नरो उपनो नली मोग ॥ अतराय हुट्टी नही ॥ कीम वीलछे ए भांग
 ॥ २ ॥ पीण व्यसहार नेणे कर्षो ॥ फेरा फरीया चार ॥ हल्ल लेसानो
 टांनरे ॥ रागजी फरी वीचार ॥ ३ ॥ जोशी मांगे दक्षणा ॥ जीम राज
 बीयाही गीत ॥ चोवो मंगल नगनीयो ॥ गोरयां गावे गीत ॥ ४ ॥
 नर दया पाणीक दळ्या ॥ दृग पेडा मन आया ॥ अंजना पवन ए
 दपनी ॥ नदरी मेढळे जाय ॥ ५ ॥ गिज्यापे पेडा पवनजी ॥ रक्षा भी
 मृप दैन ॥ अजनां आइ गकती ॥ मुखेन बोळे बोल ॥ ६ ॥ नरीं पहा
 ॥ ७ ॥ नरी वीजकी वात ॥ मुखन पृष्ठे दंपनी ॥ टपरी गपाड
 ॥ ८ ॥ नरी वीजकी वात ॥ मुखन पृष्ठे दंपनी ॥ टपरी गपाड
 ॥ ९ ॥ नरी वीजकी वात ॥ मुखन पृष्ठे दंपनी ॥ टपरी गपाड
 ॥ १० ॥ नरी वीजकी वात ॥ मुखन पृष्ठे दंपनी ॥ टपरी गपाड
 ॥ ११ ॥ नरी वीजकी वात ॥ मुखन पृष्ठे दंपनी ॥ टपरी गपाड
 ॥ १२ ॥ नरी वीजकी वात ॥ मुखन पृष्ठे दंपनी ॥ टपरी गपाड
 ॥ १३ ॥ नरी वीजकी वात ॥ मुखन पृष्ठे दंपनी ॥ टपरी गपाड
 ॥ १४ ॥ नरी वीजकी वात ॥ मुखन पृष्ठे दंपनी ॥ टपरी गपाड

बहु सीख ॥ वा० ॥ ११ ॥ तप गन्धनो श्री मोरारे हां ॥ श्री बीजं-
मुनी चंद्र मुरीस ॥ वा० ॥ हाल दसमी जेतो कहेरे हां ॥ दया साग-
रनो शीष्य ॥ वा० ॥ ११ ॥

॥ दुहा ॥ मात पीता पाय लागने ॥ कुंवरी चली पीयू राग ॥
हय गय रथ सऊ सुपिने ॥ बोलावे नर नाथ ॥ १ ॥ ए मंदीर ए मा-
लीया ॥ नगरी आही ठाण ॥ मुझने वीसरसो नही ॥ रात दीवस
सुममाण ॥ २ ॥ सीख करी सवी लोकसुं नयणे निंद प्रवाह ॥ हीयडो
फाटे मायनो ॥ उलथ्यो वीरह अथाह ॥ २ ॥ गले लागो पुत्री तणे ॥
माय करे आक्रंद ॥ प्रेम तणे परवस थइ ॥ हे है मोह नरिंद ॥ ४ ॥
आंसु कुवरी लोयणे ॥ जल धर जीम संजोय ॥ दथेलि छाला पड्या ॥
चीर नीचोय नीचोय ॥ ५ ॥ रोतां मृग रोवावीया ॥ बांट वटाउ
लोक ॥ जातां जीव बहे नही ॥ वीछडवानो सोक ॥ ६ ॥ कुंवरी चाली
सासरे ॥ हील मील सीख करेह ॥ फरीफरी पाछो जोवती ॥ डवडव
नयण भरेह ॥ ७ ॥

॥ ढाल ११ मी ॥ वे कोइ आण मीलावे सजना ॥ ए
देशी ॥ हो नृप चाल्यो तीहांथी पवनजी ॥ आदीत्य पुरनी वाटहोहो
नृप नयण न मेले नार थी ॥ १ ॥ हो साथी संग रहे ॥ वात करे
दीनरातहो ॥ हो० नृप० ॥ १ ॥ हो केइक दीनने आंतरे ॥ पोहतो
आदीत्य सेरहो ॥ हो० नृप० ॥ देपी जन सहु हरखीया ॥ एतो देखी
वरातनो घेरहो ॥ हो० नृप० ॥ २ ॥ हो रायने खबर देरावता ॥ एतो
राज सांभेलानो काज हो खबर हुई महलादने कयो सामैयानो साज हो ॥
हो० नृप० ॥ ३ ॥ हो गीत गावे साहेलीयां दंपतीने लीया वधाय हो ॥ हो० ॥

दुत कहे सुण राजवी ॥ वरुणनी जेन्या जाण ॥ ते आड लंक लुंठना ॥
 तीणसुं करो प्रयाण ॥५॥ डम गुणीनें पवनजी ॥ थयां प्रयाणे काज ॥
 मात पीता सुं जइ मीलया ॥ जागु लंका आज ॥ ६ ॥ नारीनी खबर
 तो नवि करी ॥ नही पुछी कोइ वान ॥ पीण अंजनां पीयुनें रट रही ॥
 ज्युं चंदानें रात ॥ ७ ॥

॥ ढाल १२ मी ॥ विमल जीन मारे तुम सुं प्रेम ॥
 ए देशी ॥ पवन तीहांथी चालीयोजी ॥ सैन्य सजी बलवान ॥ जाय
 जी तुं हवे वरुणने जी ॥ भलो करे भगवानहे ॥ मातां विघ्न तो कीजे
 दुर ॥१॥ आकास गांमनी चिया सजी जी ॥ आकाश मार्गे जाय ॥
 सबल सूर जुंजारने जी ॥ देखी कुमार हरपाय हे ॥ मा० ॥२॥ मोरग
 जातां सैन्यनें जी ॥ आथमीयो तव भाण ॥ सरोवर देखी रूअडोजी ॥
 तीहां दीना तंजु तांणहे ॥ मा० ॥३॥ रात पडी दीन आथम्योजी ॥
 ॥ सुता सब जुंजार ॥ तीण वक्ते कोतीक वणेजी ॥ तेहनो कहूं अधी-
 कार हे ॥ मा० ॥४॥ सरोवर उपर वृक्ष छे जी ॥ आम्रनो एक प्रधान
 तीहां वेठाते पनवजी ॥ वेठा आणन्द लाय ॥ चकवी वीरह वीशोगथी
 जी ॥ दीन वचन गील लायहे ॥ मा० ॥६॥ प्रीतम कीम ए वीरह
 पमाय ॥ हे रजनी दुरा मुखी जी ॥ तें दीयो वीरह वीयोग ॥ मुझ
 हीयडे खटके घणुंजी ॥ जीम पेट मूलनो रोग हो ॥ प्री० ॥७॥ जीहां
 लग रजनी रहे तवे जी ॥ प्रीतम रहे मारो दुर ॥ ए दुख मुझ साले
 घणुंजी ॥ मोहनो दुख छे पुर हो ॥ प्री० ॥८॥ चकवीनां सुण बोल-
 ढाजी ॥ कुमार वीचारे छे एम ॥ में छोडी मारी नीज प्रीयाजी ॥ ते
 करती हसे कहो केमरे ॥ बंधव साच कहो मुझ आज ॥९॥ पशु पंखी

अवलानां जड गुण वधेरे ॥ तवही मीले भरतार ॥ काम कलाने के-
 लवेरे ॥ दुम्न दोहग सविटालहे ॥ मुं० वी० ॥ २२ ॥ पोर दोय भू-
 पतिहां रगोजी ॥ अंजनां नारीने पास ॥ उत्सक मनमां तीहां थयोजी
 ॥ अव उडुं आकामहे ॥ मुं० वी० ॥ २३ ॥ तपगल्लनों ए साहिबोनी
 ॥ श्रीविजय मुनी चंद मुरीम ॥ जेतो कहे ढाल वारमीजी ॥ अजना
 इग्य भणीमहे ॥ माहेव अरज मुणो चीन लाय ॥ २४ ॥

॥ दुन्हा ॥ अंजनां कहे सुण माहीशा ॥ अरज कर्म चीनलाय ॥
 तुम आया मुझ मंदिरे ॥ तेहनो करो उपाय ॥ १ ॥ तुमे देमांतर चा-
 ल्जो हंरदमुं घर मांदि ॥ गरभ रगो हमे माहरे ॥ तेकीम जांण्यो जाय ॥
 २ ॥ लोहोमे निगा होतमी ॥ कलंक चढे शीर आय ॥ मातपीता मोय
 तुमो ॥ तेहनो करो उपाय ॥ ३ ॥ पान तुंणीनें समजीयो ॥ मग्य
 कर ते नगर ॥ नामांकीव ता मूर्तिहा सुंपी राजकुंसार ॥ ४ ॥ परनजी
 नर लय मुंदरी ॥ मकरीय मोर लीमार ॥ बेरीने जीवीरुगी ॥ आगें
 नर नर ॥ ५ ॥ हम धोरय देड पनजी ॥ आकाय मार्ग जाय ॥
 मग्य लय लय वीर्यो ॥ नगर ॥ लो जाय ॥ ६ ॥ मग्य लोधाने अ
 लय लय लय लय ॥ लय ॥ निदांयो चाल्या मार्गे ॥ मुवद
 लय लय लय लय ॥ लय लय लय लय ॥ लका पोदवा जाय
 लय लय लय लय ॥ लय लय लय लय ॥ लय लय लय लय ॥ लय लय लय लय ॥
 लय लय लय लय ॥ लय लय लय लय ॥ लय लय लय लय ॥ लय लय लय लय ॥
 लय लय लय लय ॥ लय लय लय लय ॥ लय लय लय लय ॥ लय लय लय लय ॥

लय लय लय लय ॥ लय लय लय लय ॥ लय लय लय लय ॥ लय लय लय लय ॥
 लय लय लय लय ॥ लय लय लय लय ॥ लय लय लय लय ॥ लय लय लय लय ॥

ताहरी सारहे ॥ सु० ते कीम देने मुद्रीका ॥ एतो जठो वोत वीचारहे ॥
 सु० सा० ॥ १३ ॥ झूठा बोली तुं झठली ॥ मुद्रीकानो ले नांमहे ॥
 सु० नवी घडाइ तें तो मुद्रीका ॥ ले तुं मुस सुत नांमहे ॥ सु० सा०
 ॥ १४ ॥ इम कही गइ नीज मेलमें ॥ केतुमाति तव जाण हो ॥ सु०
 वात कही सहु रायनें ॥ मनमां क्रोध अती आणहो ॥ सुणो राजि
 रांणी कहे पति सांभलो ॥ १५ ॥ कुल बहु थइ कुल खंपणी ॥
 नही राखवा योगहो ॥ रांजीद ॥ कुलमें कपुत खटके घणा ॥ जीम
 चक्षुनो रोगहो ॥ रा० रां० ॥ १६ ॥ एहनें पीहर मोकलो ॥ महे
 नांम सेरहो ॥ रा० इहां रयांथी कुल लाजछे ॥ तीणमें रतीय न फेरह
 ॥ रा० रां० ॥ १७ ॥ तवही राय महलादजी ॥ लायो रथ तव एक
 हो ॥ सु० ॥ तीणमें वेछाडी अंजनां ॥ मनमां धरीय वीवेकहे ॥ सु०
 नृपती कहे बहु सांभलो ॥ १८ ॥ तुमे तो जावो महेंद्र पुरे ॥ पीहर
 वासमें आजहो ॥ सु० ॥ कुल खंपण कुलमें थइ ॥ आछी गमाइ मारी
 लाजहे ॥ सु० नृ० ॥ १९ ॥ मुख ये मतिरे देखवाव जो ॥ मत करजो
 मोरी आसहे ॥ सु० देसवटो तुमे जाणनें ॥ रहजो पीहर वासहो ॥
 सु० नृ० ॥ २० ॥ रथको तीहांथी हाकीयो ॥ वसंत तीलका जाणहो
 सु० महेंद्र पुर जावा भणी ॥ कीधो तीहांथी प्रयाण हो ॥ सु० दासी-
 कहे वाइ सांभलो ॥ २१ ॥ जासां सही महेंद्र पुरे ॥ करस्यां सुखे
 वीश्रामहो ॥ सु० तीहां पुत्रने प्रसवो सुखे करी ॥ फीर भली करेगा
 भगवानहे ॥ सु० दा० ॥ २२ ॥ तुरत गइ महेंद्र पुरे ॥ अंजनां सती
 तीण वारहे ॥ सु० जाय मीली नीज मायनें ॥ वितक कखो विस्तारहो
 ॥ सु० माता कहे धीया सांभलो ॥ २३ ॥ वणी वणी को सगो सहू ॥

॥ ढाळ १४ मी ॥ वग्या झुतु पाड मोठनां एदेजी ॥
 वसंत मालाने अजनां गयी ॥ मनमां कर्ती गी-याग ॥ चालो हो वना-
 समां गयी ॥ नटीयो गत परी वारगे ॥ हो नही कां हावण हार रे
 ॥ एतो झुटो सब गसरारे ॥ धीम मोटी मोठ वीटणा ॥ १ ॥
 चालो हो वनवासमां गयी ॥ समरी जीननो नाम ॥ मानां समरण
 एहळे सखी ॥ ओर नही आने कांगरे ॥ माने चालां श्री भगवानरे ॥
 तेहनो साचो मोग जानरे ॥ धी० ॥ २ ॥ केहना छोर केहना नामरुं
 सखी ॥ केहनां मायने वाप जगमां कां केहनो नही गयी ॥ स्वास्थनी
 सहु वातरे ॥ मुझे नेणांमं नींद न आतरे ॥ हो दुख करो नवी जातरे
 ॥ धी० ॥ ३ ॥ हुं जाणती पीहर मांहेरो गयी ॥ मुखनो देवणहार ॥
 एतो भया दुखनां डावला सखी ॥ नांणी दयातो लगार रे ॥ वलीया
 पर देवे खाररे ॥ धृग झुटो जगतनो प्याररे ॥ धी० ॥ ४ ॥ वाइ
 सुणो दासी कहे सखी ॥ मती ना लगावो देर ॥ हुकम करो तो चालां
 आगले सखि ॥ रथनें देवुं फेररे ॥ इहां नही कोइ पको सेररे ॥
 एतो प्रगट्या पुणो सेररे ॥ धी० ॥ ५ ॥ अंजनां कहे दासी प्रते
 सखी ॥ चालो हीवे वनवास ॥ सासरो पीहर सारिपा सखी ॥ छोडो
 हवे एनी आसरे ॥ एतो जाणे कुटुकानो काचरे ॥ एतो झुटो मायानो
 पासरे ॥ धी० ॥ ६ ॥ इम कही चाली वन मध्ये सखी ॥ सेरनें
 सीरेरे वजार ॥ लोक सहु हाहा करे सखी ॥ पुरजननो परीवाररे ॥
 धृग राज कन्यानो अवताररे ॥ एहने नाव्यो कोइ वीचाररे ॥ धी०
 ॥ ७ ॥ अंजनां सुण बोली थइ सखी ॥ मनमां सुमतां आण ॥ दोष
 नही कोइ एहनो सखी ॥ मारा कर्म प्रमाणरे ॥ थास्ये मुझ लाजनी

जांणिरे ॥ हुं वारी लाल ॥ सुणज्यो करमनी वारता ॥ हुं ॥ १ ॥ जीव
 दया गुण वेलडी ॥ हुं ॥ मत करो जीवनी घातरे ॥ हुं ॥ भाया
 कपटी जाणके ॥ हुं ॥ मत वोलो शुद्ध लीगाररे ॥ हुं ॥ २ ॥ चोरी
 पापनो मुलछे ॥ हुं ॥ मत करो पारकी आसरे ॥ हुं ॥ कुंभी नरकमें
 पीलसे ॥ हुं ॥ परदारानें काजरे ॥ हुं ॥ सु० ॥ ३ ॥ परीग्रह मेल्युंछे
 कारमो ॥ हुं ॥ कारमो सब परीवाररे ॥ हुं ॥ धन कंचन परीवारनें
 ॥ हुं ॥ छोड चल्या पर लोकरे ॥ हुं ॥ ४ ॥ खीम्या खडग कर धा-
 रज्यो ॥ हुं ॥ लै जीन वरनो नांमरे ॥ हुं ॥ करम पडे घणा पातला
 ॥ हुं ॥ ते कीरीयाना कह्या नांमरे ॥ हुं ॥ सु० ॥ ५ ॥ हवे कहुं सम-
 कीत लाभनो ॥ हुं ॥ सुंणज्यो थइ सावधानरे ॥ हुं ॥ नास्ति भाषा
 वोले नही ॥ हुं ॥ न करवो शुद्धो वादरे ॥ हुं ॥ सु० ॥ ६ ॥ अंजनां
 सुण के वीनवे ॥ हुं ॥ कीण कीयो नास्तिक भावरे ॥ हुं ॥ ते कहो
 मुझने वारता ॥ हुं ॥ सुनी कहे ग्यांन वीचाररे ॥ हुं ॥ सु० ॥ ७ ॥
 लोह उपलोहनी वारता ॥ हुं ॥ सुंणज्यो थइ सावधानरे ॥ हुं ॥
 राज ग्रही नगरी भली ॥ हुं ॥ लोह उपलोह नांमी सेठरे ॥ हुं ॥
 सु० ॥ ८ ॥ विद्या भण्यां गुरु पासथी ॥ हुं ॥ नास्तिक सुरी गुरु
 जांणरे ॥ हुं ॥ धर्म अधर्म पुन्य पापतो ॥ हुं ॥ जीव अजीव नही
 कोयरे ॥ हुं ॥ सु० ॥ ९ ॥ पंच भुत वणी आत्मा ॥ हुं ॥ ओर सह
 जंजालरे ॥ हुं ॥ इम भाषे नास्तिक मति ॥ हुं ॥ सरदहे लोह उप-
 लोहरे ॥ हुं ॥ सु० ॥ १० ॥ तीण समें राजग्रही नयरमें ॥ हुं ॥
 आया गुणी जन साधुरे ॥ हुं ॥ प्रखदा गइ सह वांदवा ॥ हुं ॥ सु-
 नी जव दीयो उपदेसरे ॥ हुं ॥ सु० ॥ ११ ॥ सुंणी धर्म हरख्या सह

जांणिरे ॥ हुं वारी लाल ॥ सुणज्यो करमनी वारता ॥ हुं० ॥ १ ॥ जीव
 दया गुण वेलडी ॥ हुं ॥ मत करो जीवनी घातरे ॥ हुं ॥ भाया
 कपटी जाणके ॥ हुं ॥ मत वोलो झुट लीगाररे ॥ हुं० ॥ २ ॥ चोरी
 पापनो मुलछे ॥ हुं ॥ मत करो पारकी आसरे ॥ हुं ॥ कुंभी नरकमें
 पीलसे ॥ हुं ॥ परदारानें काजरे ॥ हुं ॥ सु० ॥ ३ ॥ परीग्रह मेल्युंछे
 कारमो ॥ हुं ॥ कारमो सब परीवाररे ॥ हुं ॥ धन कंचन परीवारनें
 ॥ हुं ॥ छोड चल्या पर लोकरे ॥ हुं० ॥ ४ ॥ खीम्या खडग कर धा-
 रज्यो ॥ हुं ॥ लै जीन वरनो नांमरे ॥ हुं ॥ करम पडे घणा पातला
 ॥ हुं ॥ ते कीरीयाना, कहा नांमरे ॥ हुं ॥ सु० ॥ ५ ॥ हवे कहूं सम-
 कीत लाभनो ॥ हुं ॥ सुंणज्यो थइ सावधानरे ॥ हुं ॥ नास्ति भापा
 वोले नही ॥ हुं ॥ न करवो झुटो वादरे ॥ हुं ॥ सु० ॥ ६ ॥ अंजनां
 सुण के वीनवे ॥ हुं ॥ कीण कीयो नास्तिक भावरे ॥ हुं ॥ ते कहो
 मुझने वारता ॥ हु ॥ मुनी कहे ग्यांन वीचाररे ॥ हु ॥ सु० ॥ ७ ॥
 लोह उपलोहनी वारता ॥ हु ॥ सुंणज्यो थइ सावधानरे ॥ हु ॥
 राज ग्रही नगरी भली ॥ हु ॥ लोह उपलोह नांमी सेठरे ॥ हु ॥
 सु० ॥ ८ ॥ विद्या भण्यां गुरु पासथी ॥ हु ॥ नास्तिक सुरी गुरु
 जांणरे ॥ हु ॥ धर्म अधर्म पुन्य पापतो ॥ हु ॥ जीव अजीव नही
 कोयरे ॥ हु ॥ सु० ॥ ९ ॥ पंच भुत वणी आत्मा ॥ हु ॥ ओर सह
 जंजालरे ॥ हु ॥ इम भाषे नास्तिक मति ॥ हु ॥ सरदहे लोह उप-
 लोहरे ॥ हु ॥ सु० ॥ १० ॥ तीण समें राजग्रही नयरमें ॥ हु ॥
 आया गुणी जन साधुरे ॥ हु ॥ प्रखदा गइ सह वांदवा ॥ हु ॥ मु-
 नी जव दीयो उपदेसरे ॥ हु ॥ सु० ॥ ११ ॥ सुंणी धर्म हरख्या सह

जांणिरे ॥ हुं वारी लाल ॥ सुणज्यो करमनी वारता ॥ हुं० ॥ १ ॥ जीव
 दया गुण वेलडी ॥ हुं ॥ मत करो जीवनी घातरे ॥ हुं ॥ माया
 कपटी जाणके ॥ हुं ॥ मत बोलो झुट लीगाररे ॥ हुं० ॥ २ ॥ चोरी
 पापनो मुलछे ॥ हुं ॥ मत करो पारकी आसरे ॥ हुं ॥ कुंभी नरकमें
 पीलसे ॥ हुं ॥ परदारानें काजरे ॥ हुं ॥ सु० ॥ ३ ॥ परीग्रह मेल्युंछे
 कारमो ॥ हुं ॥ कारमो सब परीवाररे ॥ हुं ॥ धन कंचन परीवारनं
 ॥ हुं ॥ छोड चल्या पर लोकरे ॥ हुं० ॥ ४ ॥ खीम्या खडग कर धा-
 रज्यो ॥ हुं ॥ लै जीन वरनो नांमरे ॥ हुं ॥ करम पडे घणा पातला
 ॥ हुं ॥ ते कीरीयाना कढ्या नांमरे ॥ हुं ॥ सु० ॥ ५ ॥ हवे कहुं सम-
 कीत लाभनो ॥ हुं ॥ सुणज्यो थइ सावधानरे ॥ हुं ॥ नास्ति भाषा
 बोले नही ॥ हुं ॥ न करवो झुटो वादरे ॥ हुं ॥ सु० ॥ ६ ॥ अंजनां
 सुण के वीनवे ॥ हुं ॥ कीण कीयो नास्तिक भावरे ॥ हुं ॥ ते कहो
 मुझने वारता ॥ हु ॥ सुनी कहे ग्यांन वीचाररे ॥ हु ॥ सु० ॥ ७ ॥
 लोह उपलोहनी वारता ॥ हु ॥ सुणज्यो थइ सावधानरे ॥ हु ॥
 राज ग्रही नगरी भली ॥ हु ॥ लोह उपलोह नांमी सेठरे ॥ हु ॥
 सु० ॥ ८ ॥ विद्या भण्यां गुरु पासथी ॥ हु ॥ नास्तिक सुरी गुरु
 जांणरे ॥ हु ॥ धर्म अधर्म पुन्य पापतो ॥ हु ॥ जीव अजीव नही
 कोयरे ॥ हु ॥ सु० ॥ ९ ॥ पंच भुत वणी आत्मा ॥ हु ॥ ओर सह
 जंजालरे ॥ हु ॥ इम भाषे नास्तिक मति ॥ हु ॥ सरदहे लोह उप-
 लोहरे ॥ हु ॥ सु० ॥ १० ॥ तीण समें राजग्रही नयरमें ॥ हु ॥
 आया गुणी जन साधुरे ॥ हु ॥ प्रखदा गइ सह वांदवा ॥ हु ॥ सु-
 नी जव दीयो उपदेसरे ॥ हु ॥ सु० ॥ ११ ॥ सुणी धर्म हरख्या सह

जांणिरे ॥ हुं वारी लाल ॥ सुणज्यो करमनी वारता ॥ हुं० ॥ १ ॥ जीव
 दया गुण वेलडी ॥ हुं ॥ मत करो जीवनी घातरे ॥ हुं ॥ भायां
 कपटी जाणके ॥ हुं ॥ मत वोलो झुट लीगाररे ॥ हुं० ॥ २ ॥ चोरी
 पापनो सुलछे ॥ हुं ॥ मत करो पारकी आसरे ॥ हुं ॥ कुंभी नरकमें
 पीलसे ॥ हुं ॥ परदारानें काजरे ॥ हुं ॥ सु० ॥ ३ ॥ परीग्रह मेल्युंछे
 कारमो ॥ हुं ॥ कारमो सब परीवाररे ॥ हुं ॥ धन कंचन परीवारनें
 ॥ हुं ॥ छोड चल्या पर लोकरे ॥ हुं० ॥ ४ ॥ खीम्या खडग कर धा-
 रज्यो ॥ हुं ॥ लै जीन वरनो नांमरे ॥ हुं ॥ करम पडे घणा पातला
 ॥ हुं ॥ ते कीरीयाना कया नांमरे ॥ हुं ॥ सु० ॥ ५ ॥ हवे कहुं सम-
 कीत लाभनो ॥ हुं ॥ सुणज्यो थइ सावधानरे ॥ हुं ॥ नास्ति भापा
 वोले नही ॥ हुं ॥ न करवो झुठो वादरे ॥ हुं ॥ सु० ॥ ६ ॥ अंजनां
 सुण के वीनवे ॥ हुं ॥ कीण कीयो नास्तिक भावरे ॥ हुं ॥ ते कहो
 मुझने वारता ॥ हु ॥ मुनी कहे ग्यांन वीचाररे ॥ हु ॥ सु० ॥ ७ ॥
 लोह उपलोहनी वारता ॥ हु ॥ सुणज्यो थइ सावधानरे ॥ हु ॥
 राज ग्रही नगरी भली ॥ हु ॥ लोह उपलोह नांमी सेठरे ॥ हु ॥
 सु० ॥ ८ ॥ विद्या भण्यां गुरु पासथी ॥ हु ॥ नास्तिक सुरी गुरु
 जाणरे ॥ हु ॥ धर्म अधर्म पुन्य पापतो ॥ हु ॥ जीव अजीव नही
 कोयरे ॥ हु ॥ सु० ॥ ९ ॥ पंच भुत वणी आत्मा ॥ हु ॥ ओर सहु
 जंजालरे ॥ हु ॥ इम भापे नास्तिक मति ॥ हु ॥ सरदहे लोह उप-
 लोहरे ॥ हु ॥ सु० ॥ १० ॥ तीण समें राजग्रही नयरमें ॥ हु ॥
 आया गुणी जन साधुरे ॥ हु ॥ प्रखदा गइ सहु वांदवा ॥ हु ॥ मु-
 नी जव दीयो उपदेसरे ॥ हु ॥ सु० ॥ ११ ॥ सुंणी धर्म हररुया सहु

जांणिरे ॥ हुं वारी लाल ॥ सुणज्यो करमनी वारता ॥ हुं० ॥ १ ॥ जीव
 दया गुण चेलडी ॥ हुं ॥ मत करो जीवनी घातरे ॥ हुं ॥ माया
 कपटी जाणके ॥ हुं ॥ मत वोलो झुट लीगाररे ॥ हुं० ॥ २ ॥ चोरी
 पापनो मुलछे ॥ हुं ॥ मत करो पारकी आसरे ॥ हुं ॥ कुंभी नरकमें
 पीलसे ॥ हुं ॥ परदारानें काजरे ॥ हुं ॥ सु० ॥ ३ ॥ परीग्रह मेल्युंछे
 कारमो ॥ हुं ॥ कारमो सब परीवाररे ॥ हुं ॥ धन कंचन परीवारनें
 ॥ हुं ॥ छोड चल्या पर लोकरे ॥ हुं० ॥ ४ ॥ खीम्या खडग कर धा-
 रज्यो ॥ हुं ॥ लै जीन वरनो नांमरे ॥ हुं ॥ करम पडे घणा पातला
 ॥ हुं ॥ ते कीरीयाना कथा नांमरे ॥ हुं ॥ सु० ॥ ५ ॥ हवे कहुं सम-
 कीत लाभनो ॥ हुं ॥ सुंणज्यो थइ सावधानरे ॥ हुं ॥ नास्ति भाषा
 वोले नही ॥ हुं ॥ न करवो झुटो वादरे ॥ हुं ॥ सु० ॥ ६ ॥ अंजनां
 सुण के बीनवे ॥ हुं ॥ कीण कीयो नास्तिक भावरे ॥ हुं ॥ ते कहो
 मुझने वारता ॥ हु ॥ मुनी कहे ग्यान वीचाररे ॥ हु ॥ सु० ॥ ७ ॥
 लोह उपलोहनी वारता ॥ हु ॥ सुंणज्यो थइ सावधानरे ॥ हु ॥
 राज ग्रही नगरी भली ॥ हु ॥ लोह उपलोह नांमी सेठरे ॥ हु ॥
 सु० ॥ ८ ॥ विद्या भण्यां गुरु पासथी ॥ हु ॥ नास्तिक सुरी गुरु
 जाणरे ॥ हु ॥ धर्म अधर्म पुन्य पापतो ॥ हु ॥ जीव अजीव नही
 कोयरे ॥ हु ॥ सु० ॥ ९ ॥ पंच भुत वणी आत्मा ॥ हु ॥ ओर सह
 जंजालरे ॥ हु ॥ इम भाषे नास्तिक मति ॥ हु ॥ सरदहे लोह उप-
 लोहरे ॥ हु ॥ सु० ॥ १० ॥ तीण समें राजग्रही नयरमें ॥ हु ॥
 आया गुणी जन साधुरे ॥ हु ॥ प्रखदा गइ सह वांदवा ॥ हु ॥ मु-
 नी जव दीयो उपदेसरे ॥ हु ॥ सु० ॥ ११ ॥ सुंणी धर्म हरख्या सह

॥ दुहा ॥ मुनी जीन कहे सुण अंजनां ॥ इम जांणी मीथ्यात ॥
 कुंण वोले नास्तिक विनां ॥ ब्रूठ तणा अवदात ॥ १ ॥ ब्रूठ हरावे
 जग तमें ॥ ब्रूठ नरक लै जात ॥ ब्रूठो माया केलवे ॥ ब्रूठो करे जीव-
 घात ॥ २ ॥ इम दीधी मुनी देशनां ॥ श्रवण करी चीत लाया वसंत
 माला तव वीनवे ॥ मुणो मुनीश्वर राय ॥ ३ ॥ अंजनां सुंदरी मुज
 प्रीया ॥ तेहनो कहो अवदात ॥ कर्म करयो मुं पूर्वे ॥ भवनी कहो
 तुमचात ॥ ४ ॥ मुनी कहे सुणजो वारता ॥ पुर्व भवनी जाण ॥ वसत
 माला कहे सत्यछे भापो कृपा नीधान ॥ ५ ॥

॥ ढाल १५ मी ॥ वीर सुणो सोरी वीनती एदेशी ॥
 मुनी कहे देव लोकथी ॥ चवी प्रगळ्यो हो प्रांणी पुन्यवान ॥ ए भव मोक्ष
 सीघावसी ॥ धन्य अंजनां हो रत्नांरी खाण ॥ जोवो कर्म गती इसी ॥
 १ ॥ कर्म गती सऊ दुख सद्यां ॥ पुर्व भवनो हो मुंणजो अवदात ॥
 राजाने दोय रांणी हुती ॥ तेहनी हो हवे कहुछुं वात ॥ जो० ॥ २
 ॥ सोरापुर पट्टण मांहीन ॥ तीहां राजाहो कनकरथ नांम ॥ तेहने
 रांणी दोय थड ॥ मांहो मांहे हो नही संपनो कांम ॥ जो० ॥ ३ ॥ ते-
 हना नांम कऊं हवे ॥ लक्ष्मणा हो कनकोदरी नांम ॥ ते लडती वढती
 नीतरहे ॥ नही वाहलो हो धणी रायजी स्वाम ॥ जो० ॥ ४ ॥ ल-
 क्ष्मणा रांणी जीन धर्मणी ॥ प्रभु पुजाहो करती गीत ग्यांन ॥ कनको-
 दरी जीन धर्मनी द्वेषणी ॥ करे प्रभुनीहो आसातना जाण ॥ जो० ॥
 ५ ॥ एक दीन रांणी लक्ष्मणा ॥ घर चेत्ये हो पुज्या जीन देव ॥
 स्थापना करी जीन मुरती ॥ विधि महीत हो करो जीनवर सेव ॥
 जो० ॥ ६ ॥ लक्ष्मणा गटनीज मेळमें ॥ पाळे थीहो कनकोदरी जाण

लक्ष्मणा उपरे ॥ बाकी रयाहो हवे तेहनो रोग ॥ जो० ॥ १८ ॥ घणा
 कर्म तें भोगव्या ॥ बाकी रयाहो हवे थोडा जाण ॥ पीछे सुख घणो
 होवसी ॥ इम जाणीहो मन धर्मनें आण ॥ जो० ॥ १९ ॥ अंजनां
 सुंदरी इम सुणी ॥ हवे लागी हो धर्म ध्याननें काज ॥ आवश्यक छए
 साचवे ॥ मन भावेहो एने शीवपुर राज ॥ जो० ॥ २० ॥ इम रहे
 अंजना वन मध्ये ॥ नीत प्रतेहो लहे जीनवर नाम ॥ गुफा एक आश्रम
 कने ॥ तीहां दंपतीने हो रहवानो ठाम ॥ जो० ॥ २१ ॥ रात दीवस
 सुखसु रहे ॥ गुफा मांहीहो धरती सुभ ध्यान ॥ आहार करे फल
 फुलनो ॥ तिण वेलाहो अचरीज वण्यो तांम ॥ जो० ॥ २२ ॥ तपगळ
 नायक सोभतो ॥ पट धारीहो मुनीचंद्र मूरीस्वाम ॥ तस प्रसादे जेतो
 कहे ॥ ढाल पनरमी हो सोहे युक्तीमान ॥ जो० ॥ २३ ॥

॥ दुहा ॥ इम रहती सुखे अंजनां ॥ आश्रम गुफा मजार ॥
 नव मास पुरा ऊआ ॥ उपर दीन तीयचार ॥ १ ॥ बालक प्रसव्यो
 तीण समें ॥ अंजना सुंदरी जाण ॥ विधि वीधान सहुए करया ॥
 वसंत मालाचीत आण ॥ २ ॥ घडी एक्के अंतमें ॥ अंजनां हुइ सचेत
 ॥ रुदन करे आक्रंद पणें ॥ अरवा लागी नेत्र ॥ ३ ॥ तीणवेलां
 आकाशमां ॥ खैचर उड्यो जाय ॥ आक्रंद शब्द तेणें सुण्यो ॥
 श्रवणकरी चीत लाय ॥ ४ ॥ प्रती सूर्य तीहां आवीयो ॥ अंजनां
 सुंदरी पास ॥ अंजनां रोवे दुख भरी ॥ मुखे मेलनी स्वास ॥ ५ ॥

॥ ढाल १६ मी ॥ जैसा जलरी माठली ॥ तलफ
 तलफ मरजाय ॥ खांविंद मोरा हो ए देशी ॥ अंजना
 सुख सुद्ध भणे ॥ पवन पवन चीतधार ॥ खांविंद मोरा हो जीण

लक्ष्मणा उपरे ॥ बाकी रगोहो हवे तेहनो रोग ॥ जो० ॥ १८ ॥ घणा
 कर्म ते भोगव्या ॥ बाकी रगोहो हवे थोडा जाण ॥ पीछे सुख घणो
 होवमी ॥ इम जाणीहो मन धर्मनें आण ॥ जो० ॥ १९ ॥ अंजनां
 सुंदरी इम सुणी ॥ हवे लागी हो धर्म ध्याननें काज ॥ आवश्यक छए
 साचवे ॥ मन भावेहो एने जीवपुर राज ॥ जो० ॥ २० ॥ इम रहे
 अंजना वन मध्ये ॥ नीत प्रतेहो लहे जीनवर नाम ॥ गुफा एक आश्रम
 कने ॥ तीहां दंपतीने हो रहनानो ठाम ॥ जो० ॥ २१ ॥ रात दीवस
 सुखसुं रहे ॥ गुफा मांहीहो धरती सुभ ध्यान ॥ आहार करे फल
 फूलनो ॥ तिण बेलाहो अचरीज वण्यो तांम ॥ जो० ॥ २२ ॥ तपगछ
 नायक सोभतो ॥ पट धारीहो मुनीचंद्र मूरीस्वाम ॥ तस प्रसादे जेतो
 कहे ॥ ढाल पनरमी हो सोहे युक्तीमान ॥ जो० ॥ २३ ॥

॥ छुहा ॥ इम रहती सुखे अंजनां ॥ आश्रम गुफा मजार ॥
 नव मास पुरा ऊआ ॥ उपर दीन तीयचार ॥ १ ॥ बालक प्रसव्यो
 तीण समें ॥ अंजना सुंदरी जाण ॥ विधि वीधानं सट्टए करया ॥
 वसंत मालाचीत आण ॥ २ ॥ घडी एक्के अंतमें ॥ अंजनां हुड सचेत
 ॥ रुदन करे आक्रंद पणें ॥ झरवा लागा नेत्र ॥ ३ ॥ तीणवेलां
 आकाशमां ॥ ख्यैचर उड्यो जाय ॥ आक्रंद शब्द तेणें सुण्यो ॥
 श्रवणकरी चीत लाय ॥ ४ ॥ प्रती मूर्य तीहां आवीयो ॥ अंजनां
 सुंदरी पास ॥ अंजनां रोवे दुख भरी ॥ सुखे मेलनी स्वास ॥ ५ ॥

॥ ढाल १६ मी ॥ उसा जलरी माठली ॥ तलफ
 तलफ मरजाय ॥ खांविंद मोरा हो ए देशी ॥ अंजना
 सुख सुडम भणे ॥ पवन पवन चीतधार ॥ खांविंद मोरा हो जीण

(१२२)

धरमी नरनो नाथ ॥ साहीव मोराहो ॥ श्रीविजय मुनीचंद्र सुरीस्वरु
॥ रापे धरमनी आथ ॥ सा० ॥ गुरु गुणनो नही पारछे ॥ १२ ॥
सोलमी ढाळे अंजनां ॥ वेठीवी मानमां आय ॥ सा० ॥ हवे आवी
तेहनी शुभ दिश जेतो वोळे सुखदाय ॥ सा० गु० ॥ १३ ॥

॥ दुहा ॥ चतुर वीसक्षण जीवडा ॥ वेठ विमांनमां आय ॥ ते
उळ्यो आकाशमां ॥ पवन वरावर जाय ॥ १ ॥ तीहां अचरोज हुओ
अती भलो ॥ सुंण जो तेनी वात ॥ अंजनां गोदसुं नांनडो ॥ पड्यो
महीतल जात ॥ २ ॥ परवत शीखर उपरे ॥ पड्यो बालक तीणवार ॥
परवत थरवयो तीण समें ॥ हुंक चुरण समथाय ॥ ३ ॥ माता वील-
वंती घणी ॥ बालक कारणे जाण ॥ प्रति मुरज विद्याधरु ॥ पुछे
भन हीत आंण ॥ ४ ॥ अंजनां कहे सुंण वंधवा ॥ भाणुडो महीतल
जाण ॥ के सुंओ के जीवतो ॥ खवर करो चीत आंण ॥ ५ ॥ प्रति
मुरज विद्याधरे ॥ थांभ्यो आप विमांन ॥ खवर करे बालक तणी ॥
परवत उपर जाण ॥ ६ ॥ आयो हुंकनें उपरा ॥ बालक दीडो आप
॥ कुसळे खेमे रमी रयो ॥ जोम संसेड्यो साप ॥ ७ ॥ प्रती मुरज
दीडो सही ॥ पड्यो कुमर ते आही ठांण ॥ परवतनुं चुरण कस्युं ॥
कुमरते कुसळे जाण ॥ ८ ॥ देख कुमरनें कर ग्रथो ॥ वेठो विमां-
नमां आय ॥ तुरत चळायो तीहां थकी ॥ हनरुह नयरे जाय ॥ ९ ॥
तुरत आया नीज नयरमें ॥ दीन दम बीता जाण ॥ भाणुडोळे बालको
॥ तेहनां करे वग्यांण ॥ १० ॥ मुणेज माता अंजनां ॥ मुणे सरजन
परीवार ॥ बळके तो हनुमंतनो ॥ तेहनो मुणो विम्तार ॥ ११ ॥

धरमी नरनो नाथ ॥ साहीव मोराहो ॥ श्रीविजय मुनीचंद्र सुरीस्वरू
॥ रापे धरमनी आथ ॥ सा० ॥ गुरू गुणनो नही पारछे ॥ १२ ॥
सोलमी ढाले अंजनां ॥ वेठीवी मानमां आय ॥ सा० ॥ हवे आवी
तेहनी शुभ दिश जेतो बोले सुखदाय ॥ सा० गु० ॥ १३ ॥

॥ पुहा ॥ चतुर वीसक्षण जीवडा ॥ वेठ विमानमां आय ॥ ते
उड्यो आकाशमां ॥ पवन वरावर जाय ॥ १ ॥ तीहां अचरोज हुओ
अती भलो ॥ सुंण जो तेनी वात ॥ अंजनां गोदसुं नांनडो ॥ पड्यो
महीतल जात ॥ २ ॥ परवत शीखर उपरे ॥ पड्यो बालक तीणवार ॥
परवत थरवयो तीण समें ॥ हुंक चुरण समथाय ॥ ३ ॥ माता वील-
वंती घणी ॥ बालक कारणे जाण ॥ प्रति मुरज विद्याधरू ॥ पुछे
भन हीत आंण ॥ ४ ॥ अंजनां कहे गुण बंधवा ॥ भाणुडो महीतल
जाण ॥ के सुंओ के जीवतो ॥ खबर करो चीत आंण ॥ ५ ॥ प्रति
मुरज विद्याधरे ॥ थांभ्यो आप विमान ॥ खबर करे बालक तणी ॥
परवत उपर जाण ॥ ६ ॥ आयो हुंकनें उपरा ॥ बालक दीठो आप
॥ कुसले खेमे रमी रयो ॥ जोम संसेड्यो साप ॥ ७ ॥ प्रती मुरज
दीठो सही ॥ पड्यो कुमर ते आही ठांण ॥ परवतनुं चुरण कस्युं ॥
कुमरते कुमले जाण ॥ ८ ॥ देख कुमरनें कर ग्रथो ॥ वेठो विमां-
नमां आय ॥ तुरत चढायो तीहां थकी ॥ हनरूह नयरे जाय ॥ ९ ॥
तुरत आया नीज नयरमें ॥ दीन दम बीता जाण ॥ भांणुडोछे बालको
॥ तेहनां करे बख्वांण ॥ १० ॥ मुंणेज माता अंजनां ॥ मुणे सज्जन
परीवार ॥ बळके तो हनुमंतनो ॥ तेहनो मुणो विस्तार ॥ ११ ॥



॥ देही कडग्वानी ॥ आनीयो तांमकर जोर नव फोस्तो ॥
 वरन राज मनगीम आंणी ॥ सुभट स्वटविकट माये करी आपणा ॥
 रोस चडीयो वटे अग्रुभ नांणी ॥ १ ॥ आ० ॥ आवरे मुहजो न्ह
 मेले नही ॥ आज मृगराज सुतो जगाज्यो ॥ धरण भुजावतो साहमो
 आवतो ॥ छोट धरी लोटगु सीर उडाज्यो ॥ २ ॥ धरणी भटवडी ॥
 गडीय दमांमा धुनी ॥ दहडीसे प्रवरया सवला मुरा ॥ तुरंग भट
 पाखरया ॥ सहस्र हाते धरया ॥ नासता मासता रणस तुरा ॥ आ०
 ॥ ३ ॥ बांण वरसे घणा ॥ मूढट हाथां तणा ॥ गयणखी रयण
 अंधार कीयो ॥ भाट भड उछली सवल खंडातणी ॥ पवनजी जीहां
 प्रथम पावदीधो ॥ ४ ॥ झुठडो जनुदल मुड करतो प्रवल ॥ गाजतो
 गाज आवाज करतो ॥ केइ केवोहण्या शीश दुरे लुण्यां ॥ अंग उछ-
 रंग धरी जंग फीरतो ॥ ५ ॥ अधिक मछराल पवन इम वाचाल ॥
 घाव घमसांण हेराण कीधा ॥ घाव ठांमे रूधिर विंधधारा पडे ॥
 अरीतणा जीव कीण काढ लीधा ॥ आ० ॥ ६ ॥ इम लज्यो आथ-
 ल्यो कुंवर अरी सेन्यमु ॥ करून राजनें ततकाल बांध्यो ॥ बांधकर
 आपणा साथमें आंणियो ॥ साहमो कीण हीन तीर सांध्यो ॥ ७ ॥
 काय पवनजी नांख्यो दल फोजमें ॥ वरूननें जीत यस वास लीधो ॥
 तीणवार रावणें पवन कुमारनें ॥ राज सनमान अधिकार दीधो ॥
 आ० ॥ ८ ॥ निभ्रंछी वरूननें फीटकार देइ करी ॥ अही रावणें
 तेहनो राज सुंपद कीधो ॥ खरणी भरतो सही आंण माने सदा ॥
 पवन कुमारनो काज सीधो ॥ आ० ॥ ९ ॥ तपगछ नायक जगत
 शुरू राजता ॥ श्रीवीजय मुनीचंद्र सूरि सध्यावो ॥ एहना पुन्य प्रबळ

नजी ॥ पोहता नीज आवाम ॥ ल० ॥ तिहां विसामो लेइ करी ॥
पोहता मातानें पास ॥ ल० ॥ प० ॥ ६ ॥ पाय लागे माय वापनें ॥
पुढे कुशलनें खेम ॥ ल० ॥ भक्ती बीधी सवी साचवे ॥ मनमां
आंणी बहु प्रेम ॥ ल० ॥ प० ॥ ७ ॥ तापीळे राग पवनजी पुढे
अजनानी वात ॥ ल० ॥ मात पीता निलखा थड ॥ समजावे बहु
भांत ॥ ल० ॥ पं० ॥ ८ ॥ कुलवद् थड कुल संपणी ॥ लजीत थयो
सद्गुराज ॥ ल० ॥ गर्भ बध्दो जेहनी कुगमे ॥ विण साद्या मद्
काज ॥ ल० ॥ प० ॥ ९ ॥ तीण कारण तुज नारनें ॥ मुक्ती पीढर
नाम ॥ ल० ॥ गरम जो होवे मुग उपरा ॥ तो मत करजो तुम आम
॥ ल० ॥ प० ॥ १० ॥ तपमन्त्र नापक गोभता ॥ श्रीनिजे मुनीचंद
गुरीस ॥ ल० ॥ उगणीसमी ठाणे जेवो कहे ॥ पवनजी उम
दमजीस ॥ ल० ॥ प० ॥ ११ ॥ माव ॥

॥ दुहा ॥ मात पीता तुमे सांभयो ॥ कीनों गद् अकाज ॥
 मरी ॥ १ ॥ कहेक नेद ॥ चीण गगनो मरी राज ॥ १ ॥ अंजनां मरी
 मरी ॥ २ ॥ कहेक नी ॥ चीण गगनो मरी राज ॥ २ ॥ अंजनां मरी
 मरी ॥ ३ ॥ कहेक नी ॥ चीण गगनो मरी राज ॥ ३ ॥ अंजनां मरी
 मरी ॥ ४ ॥ कहेक नी ॥ चीण गगनो मरी राज ॥ ४ ॥ अंजनां मरी
 मरी ॥ ५ ॥ कहेक नी ॥ चीण गगनो मरी राज ॥ ५ ॥ अंजनां मरी
 मरी ॥ ६ ॥ कहेक नी ॥ चीण गगनो मरी राज ॥ ६ ॥ अंजनां मरी
 मरी ॥ ७ ॥ कहेक नी ॥ चीण गगनो मरी राज ॥ ७ ॥ अंजनां मरी
 मरी ॥ ८ ॥ कहेक नी ॥ चीण गगनो मरी राज ॥ ८ ॥ अंजनां मरी
 मरी ॥ ९ ॥ कहेक नी ॥ चीण गगनो मरी राज ॥ ९ ॥ अंजनां मरी
 मरी ॥ १० ॥ कहेक नी ॥ चीण गगनो मरी राज ॥ १० ॥ अंजनां मरी

नींद गइ नेंणा थकी ॥ में ॥ चिंता चीनन माग ॥ पा० ॥ गुग देमाओ
 आपणो ॥ में ॥ तीम मोनें गुग थाय ॥ पा० ॥ ५ ॥ कहे तुं गुंदर
 कीहां गइ ॥ में ॥ कीम नाने घर आज ॥ पा० ॥ तुम नीन मुंनीमे
 जडी ॥ में ॥ तुम वीण मरे न काज ॥ पा० ॥ ६ ॥ गीम करी मुज
 सं रही ॥ में ॥ पतिक मोटो जाण ॥ पा० ॥ गुंदर हने मुग बोलजे ॥
 में ॥ दया मुजपेतुं आण ॥ पा० ॥ ७ ॥ एह हासुं कीम कीजीये ॥ में
 ॥ इण हांमी जीव जाय ॥ पा० ॥ प्राण हुवाले प्राहुणा ॥ में ॥ के
 थो दरसन आय ॥ पा० ॥ १८ ॥ देव कोड अपहरि गयो ॥ में ॥ के-
 पडी उझड मांय ॥ पा० ॥ के कोइ जीव डसी गयो ॥ में ॥ के मरण
 गई वन मांय ॥ पा० ॥ ९ ॥ चितारे नृप गुण नारिनां ॥ में ॥ वी
 लवंतो वारोवार ॥ पा० ॥ मन मुंजे तन टलवले ॥ में ॥ नयणन खंडे
 धार ॥ पा० ॥ १० ॥ इम जावे नृप रोवतो ॥ में ॥ सवही दीन
 अरू रात ॥ पा० ॥ सहुए करे काम आपणो ॥ में ॥ कुंवरनें कछु न
 सुहात ॥ पा० ॥ ११ ॥ हा हा हवे हुंशुं करूं ॥ में ॥ कीहां जाउं कीर-
 तार ॥ पा० ॥ वनमां हुंठे चीहु दीसे ॥ में ॥ कीहां हीन पाड नार ॥
 पा० ॥ १२ ॥ हे हे मोह नरिंदजी ॥ में ॥ अवलामें एवडा थोक ॥
 पा० ॥ जेतो कहे ढाल वीसमी ॥ में ॥ कर्मनें न सके रोक
 ॥ पा० ॥ १३ ॥

॥ **पुहा** ॥ इम वीलवंता पवनजी ॥ रोवे भरभर नेण ॥ तीण वेला
 कहे मेंवची ॥ सुणरे सजन सेंण ॥ १ ॥ नारी पगनी भोजडी ॥ सरीपी
 दोनुं जाण ॥ हाजीर होय तो केवटो ॥ नहीं तो होणो अजाण ॥ २ ॥
 इम सुंणी कहे पवनजी ॥ सुणरेस जन वात ॥ केतो मीलसी मोय

थी जस बाधतो ॥ विद्या भणें वीसेप ॥ ३ ॥ नृप थी वीद्या मोटकी ॥
 नृप नीज देश पुजाय ॥ वीद्या जग सहु पुज्यछे ॥ माने राणो राय
 ॥ ४ ॥ पंच वरस पुत्र पालीये ॥ दसे भणावे सोय ॥ सोल वरसो
 सुत थयो ॥ पुत्र मीत्र सम जोय ॥ ५ ॥

॥ ढाल २३ मी ॥ वेरुले चार घणो ठे राजा ॥ वातां
 केम करोठो ॥ ए देशी ॥ राग केदारो ॥ इम जांणीते पुत्र-
 नेंरे ॥ भणवा मुंके (सार) ताय ॥ पाटी खडीया छेइ संचरेरे ॥ पुत्र
 नैसाले जाय ॥ कुमरजी विद्या भणें सुख कार ॥ जांणे मुगुरुनो उप-
 कार ॥ कु० ॥ १ ॥ शृंगार पेहेरी चढे हाथीयेरे ॥ आपे फोकल पान
 ॥ माहाजन सहृए रंजीयारे ॥ लोक देवे बहुमान ॥ कु० ॥ जां० २ ॥
 फांमनी पुठे गावतीरे ॥ बोले वीरदावली भाट ॥ पंडित घर कुमर
 आवीयोरे ॥ देवे चीरोदक पाट ॥ कु० ॥ जां० ॥ ३ ॥ पंडित नें वली
 आपीयारे ॥ दांन अनेक प्रकार ॥ फुली खडीया आपतोरे ॥ नैसा-
 ल्पानिं सार ॥ कु० ॥ जां० ॥ ४ ॥ विद्या भणी कुमर आवीयोरे ॥ हर-
 प्या मायनं ताय ॥ बहुतर कला सीखी वलीरे ॥ मुणो नांग कहवाय
 ॥ कु० ॥ जां० ॥ ५ ॥ बहुतर कला नरनो कहुरे ॥ चोमठ नारीनी होग
 ॥ धर्म कर्म कुमर जाणतोरे ॥ राज नीति जांण मोय ॥ कु० ॥ जां० ॥ ६ ॥
 मंत्र जंत्र आपटी जाणतोरे ॥ जांणे कनकनी मीथ ॥ रंग रंगाडे
 जुवटारे ॥ जांणे पर घर गीद्ध ॥ कु० ॥ जां० ॥ ७ ॥ टाकण शाकण ने
 नटेने ॥ जांणे नारीना भोग ॥ जांणे सेवक जांगवीरे ॥ जांणे सयल मंजोश
 ॥ कु० ॥ जां० ॥ ८ ॥ शयन वीलेपन जाणतोरे ॥ वैद्यक जांणे उल्लास ॥
 जांणे नाद गीत नासवुरे ॥ जांणे वचन वीलास ॥ कु० ॥ वी० ॥ ९ ॥

॥ दुहा ॥ इम पिता भणी हनुमानजी ॥ गया कला गात गांन
 ॥ पवनजीनें अंजनां ॥ देखी रहे मुग्गमांन ॥ १ ॥ नीण कान्ठनें तीण
 समं ॥ वरुण राज भरी रीम ॥ आनयो लंका उपरे ॥ लडवा नीसगा
 बीम ॥ २ ॥ रावण तेढा राजनी ॥ भेजी पनी गार ॥ मेन्या मह
 त्त्यारी करी ॥ आवज्जो जुध मजार ॥ ३ ॥ हनुमत् नयरमें हूत आ-
 वीयो ॥ प्रति सूर्यने पाग ॥ हनुमत मुग्गमुं डम कहे ॥ चीतमां थड्य
 हुलास ॥ ४ ॥ कोण देमनां राजनी ॥ अठे आया कीण काज ॥ प्रति
 सूर्य कहे उत्तण ॥ मुक्कयोछे रावण राज ॥ ५ ॥ जुधमें लडवा कारणें
 ॥ पत्नी भेजीछे आज ॥ वरुण सांमा भडवुं अछे ॥ ओर नही कोड
 काज ॥ ६ ॥ हनुमत कहे हुं जावमु ॥ रावण राजाने पाम ॥ जुधजी-
 तीनें आवमु ॥ एहवुंछे मुज वीसवास ॥ ७ ॥ एहयो कही हनुमतजी
 ॥ चाल्या जुध मजार ॥ साथे जोधा मुरमां ॥ तेहनो मूणोथेवी
 चार ॥ ८ ॥ केइ मांनी मछरालवा ॥ केइ अवनी बलवंत ॥ रोसाला
 हट वादीया ॥ केहतां नावे अंत ॥ ९ ॥ जाय रावणनें भेटीयो ॥ हनु-
 मत कीध जुहार ॥ कीहांछे वरुणनी फोजण ॥ तेहनो कहो वीस्तार
 ॥ १० ॥ इम मुणी राय रावणे ॥ करी चतुरंग सेन्य तीयार ॥ हनुमत
 रावण दोय सही ॥ गया वरुणने पास तीवार ॥ ११ ॥

॥ ढाल २४ मी ॥ देशी करुखानी ॥ आवरे वरुण कर-
 जुध हवे जोरसुं ॥ मन मांहें मत त्रास आणें ॥ सुतो मृगराज आज
 हाथे तें जगाड्यो ॥ हवे ताहरो दीन फीरयो तुं साच जाणें ॥ आवरे
 वरुण कर जुध हवे जोरसुं ॥ १ ॥ चढ्यो वरुण मन रीस अती आं-
 णनें ॥ सेन्य चतुरंगसुं जुध ठाणें ॥ चक्र वाक जीम शेन्य सबलीरसी

पुकारता ॥ खडग लेइ शक्ती तव वेल आवे ॥ भाट वीरदावली बोले
 वीरावली ॥ मूणी जोधारण वीस धावे ॥ आ० ॥ १२ ॥ केइ छेदता
 केइ भेदता ॥ केइ बोलता बोल वंका ॥ नोयतां गड गडे ढोलते दडदडे
 ॥ वाजाते वाजे नीसांण डका ॥ आ० ॥ १३ ॥ ग्रीश उडाडता ॥
 जोधानें पाडता ॥ ताडता वेरीनें वहे रुद्र खाला ॥ मेह परनालज्यु न-
 यरना खालज्यु ॥ वहे रक्तना जेम नदीय नाला ॥ आ० ॥ १४ ॥
 जुय इण परकरी वरुण ते नाठो फरी जीत हुइ हनुमंत केरी ॥ जय जय
 कार थइ रयो हनुमंत जीतगयो ॥ त्युंहीजीत होज्यो कविय तेरी ॥
 आ० ॥ १५ ॥ तपगळ नाथ जगत सीर कीजो हाथ ॥ जपुंछुं मालामें
 नाम तेरो ॥ श्री विजय मुनीचंद्र सुरीस तपो ॥ जगत जसवास लीजो
 घणेरो ॥ आ० ॥ १६ ॥ ढाल चौविसमी जीत हनुमंतनी ॥ वध्यो
 जगतमां यस वास तेरो ॥ जेत सागर कहे पुन्यथी सह लहे ॥ करो
 भवी धर्म ज्युंछे भव फेरो ॥ आ० ॥ १७ ॥

॥ डुहा ॥ वरुणनें हनुमंत जीतीयो ॥ बांधी लायो तेह ॥ राव-
 णनें कहेंओ लखो ॥ ताहरो चोरछे एह ॥ १ ॥ रावण मन हरख्यो
 घणु ॥ दीयो अधीक तस मांन ॥ कन्या यसोमति दांनदी ॥ लीनी
 श्रीहनुमान ॥ २ ॥ देखी लका भुमीका ॥ नीरख्या वन आराय ॥
 तीहांथी चाल्या हनुमंत जी ॥ पोहता हनरूह गांम ॥ ३ ॥ मात
 पीतानें पाय नमी ॥ जीत वधाइ कीथ ॥ प्रती मुरजके पाय पंड्यो ॥
 जगतमां सोभा लीथ ॥ ४ ॥ इम रहतां दीन केतले ॥ बोल्या पवन
 जय आप ॥ हवे जालो देश आपणें दयाद करेछे माय वाप ॥ ५ ॥

॥ ढाल १५ मी ॥ उगो धनदीन आज ॥ सफट्योरे
 जनम सहरीरी ॥ एदेशी ॥ इम विचारी मन मांय ॥ पवनजी

वनपां आया जाण ॥ धर्मगोपगरी गगोगग्या ॥ गांनवा जीनरा
आण ॥ ४ ॥ तेहमुणो मालाद नप ॥ गया नंदननं राज ॥ आगर
जाणी मुनीगम् एगकहे माहाराज ॥ ५ ॥

॥ ढाल २६ मी ॥ रामचंद्र केरा वागमां ॥ दोय आंवा
पाका वेलो ॥ अहो दो० ॥ ए देशी ॥ धर्मनडो गमारमां मुणो
भवी प्राणीरेलो ॥ अहो ॥ मु० ॥ दांन सीयल तप भावनां ए शुभ
जांणीरेलो ॥ अ० ॥ शु० ॥ एह जगतमां सारळे मोक्ष नीशांणीरेलो
॥ अ० ॥ मो० ॥ भवभव टारन सांभलो जीन वांणीरेलो ॥ अ० ॥
जी० ॥ १ ॥ ए संसार असारळे मुणो राजारेलो ॥ अ० ॥ सु० ॥
जगतनी माया कारमी मुणो माहाराजारेलो ॥ अ० ॥ मु० ॥ धर्म-
वंतजे प्रांणीया पांमे मूख ताजारेलो ॥ अ० ॥ पां० ॥ मुरग मोक्षनां
सुखडांते पांमळे जाजारेलो ॥ अ० ॥ पां० ॥ २ ॥ क्षीण बीते जे का-
लनी ते सह्य जावेरेलो ॥ अ० ॥ ते० ॥ आउपनी बीती जे घडी ते
नवी फीर आवेरेलो ॥ अ० ॥ न० ॥ धर्मवीहुणो जीवडो गोता ज-
गमें खावेरेलो ॥ अ० ॥ गो० ॥ ३ ॥ धर्म धर्म करतो थको जीव जा
छेरेलो ॥ अ० ॥ जी० ॥ पड्यो नरक अघोरमां दुख पाछेरेलो ॥
अ० ॥ दु० ॥ मरतांकी वेला मांनवी घणु पोस्ताछेरेलो ॥ अ० ॥ घ०
॥ अंतसमे जीवनें शरणो कोइ नथीछेरेलो ॥ अ० ॥ फी० ॥ ४ ॥
धन छोडीने मरी गयो फीर कुण खाछेरेलो ॥ अ० ॥ फी० ॥ धन
खाछे कोइ दुसरा दुख पोते पाछेरेलो ॥ अ० ॥ दु० ॥ इण भव पर
भव मांयनें तोरो कुण थाछेरेलो ॥ अ० ॥ तो० ॥ पुन्य पाप दोय
लेइने जीव एकलो जासेरेलो ॥ अ० ॥ जी० ॥ ५ ॥ इम मुंणोराय

जोए ॥ मतदेजो केहनें दुखतो ॥ ३ ॥ राज काज सहु सुंपनेए ॥
 बहु भलामण देयतो ॥ चारीत्र गुरु पासे ग्रहेए ॥ राजा राणी दो-
 यतो ॥ ४ ॥ मुखे सभाधे रायजोए ॥ पाछे चारीत्र सारतो ॥ राज
 काज करे पवनजीए ॥ तेहनो कहुंछुं वीचारतो ॥ ५ ॥ राज पाछे
 नीति पणेंए ॥ जाणुं राजा रामतो ॥ मंत्री प्रधान जन सहुए ॥ करेछे
 रायनो काँमतो ॥ ६ ॥ पटराणी अंजनां थइए ॥ हनुमत नाम कुमारतो
 ॥ वसंत माला मोटी सखीए ॥ मान्छे राज मजारतो ॥ ७ ॥ अजनां
 पवन खेले रमेए ॥ रम रया मेहल मजारतो ॥ कवहीक वनक्रीडा
 करेए ॥ कवहीक जल कीलोलतो ॥ ८ ॥ दोगंधक मुरनी परेए ॥
 भोगवे भोग रसालतो ॥ भोजन भक्तीकरे घणीए ॥ दांन मान सभा-
 लतो ॥ ९ ॥ तपगछनोए राजीयोए ॥ श्रीबीजयमुनी चंद्रसुरी रायतो
 ॥ धर्मनीतीमां नीर्मलोए ॥ प्रणमें छे तेहनां जनसहु पायतो ॥ १० ॥
 ढाल सतावीसमी अति भलीए ॥ पवनजी पाछेछे राजतो ॥ जेतोकहे
 भवी सांभलोए ॥ सारेछे जीनधर्ममुं काजतो ॥ ११ ॥

॥ दुहा ॥ राज राणी सुत सहीत ॥ पाछे राज अखंड ॥ अहनीश
 अभीनव प्रेममुं ॥ पुर्व परे प्रचंड ॥ १ ॥ पुण्यपसाए भोगवे ॥ मन
 वंछीत मुख भोग ॥ देव उगंध मुरनीपरे ॥ सुपनांमां नही सोग ॥ २
 ॥ टण अवसर तीहां आवीया ॥ आचाराज पद धार ॥ श्रीचंद्रसुरी
 मीरोमणी ॥ पंचमय परीवार ॥ ३ ॥ दरमण तेहनो देखतां ॥ पातीक
 दूर पृथ्वाय ॥ वांछा वीत्र दळे सक ॥ नामें नव नीध थाय ॥ ४ ॥
 वन पाळके वधामणी ॥ नरवरनें जद दीध ॥ दांन दीधुं तेहनें घणु ॥
 मन वंछीत मुख कीध ॥ ५ ॥ आटंवर अरीके करी ॥ जेम जमाळीजाय

नवविध परीग्रह छोडीयेरे ॥ दसविध यतीधर्म धार ॥ आदर करीनें
 पालीयेरे ॥ तो पांमें भवपार ॥ वुटक ॥ तो पांमें भवपार ते जाणो ॥
 प्रभुको नांम ते चीतमां आणो ॥ इण वीध धर्म कळो ते पालो ॥ अ-
 शुभ मार्गनां दुपण टालो ॥ जी० ॥ ५ ॥ ढाल ॥ एह शरीर अस्वास-
 तोरे ॥ जीनवर भाये एम ॥ सिंध्या रागनें सारीपुंरे ॥ तीण उपर स्यो-
 प्रेम ॥ वुटक ॥ तीण उपर स्योप्रेम ते दाखो ॥ मनवचकायानें वस-
 करी राखो ॥ शुभ मारगनां कांमजो कीजे ॥ परउपगार करीयश
 लीजे ॥ जी० ॥ ६ ॥ धन जोवन जाणो एहवार ॥ जेहवुं कुंजर कांन
 ॥ खीण गांहें खेरूं होवेरे ॥ वादल छांया समान ॥ वुटक ॥ वादल
 छाया समान मुग्धांनी ॥ वीतरागनी एहवीछे वांणी ॥ खाय स्वर-
 मनें लाहो ते लीजे ॥ कृपण होय संचय नवी कीजे ॥ जी० ॥ ७ ॥
 ढाल ॥ नदीयवेग सरीपो कळोरे ॥ जोवनवय दीन चार ॥ छेह
 टेखावे छेहटेरे ॥ जातां न लागेवार ॥ वुटक ॥ जातां न लागेवार स-
 नेही ॥ जतन करंतां वीणछे देही ॥ एहवुं जांणी भक्ती कीजे ॥ जीन-
 पुजा करी लाहो लीजे ॥ जी० ॥ ८ ॥ ढाल ॥ जीवने पीण जातां
 थकारे ॥ वार न लागे कांय ॥ जल पंपोटा तणी परेरे ॥ अथीर एह
 कहेवाय ॥ वुटक ॥ अथीर एह कहेवायरे मानव ॥ वीणछे केट देव-
 जो टांनव ॥ अमर कांठ नही टण जा जगमें ॥ काल भमंछे पगलां
 पगमे ॥ जी० ॥ ९ ॥ ढाल ॥ वीत्या वायर जे जायछेरे ॥ ते फीर
 मुळ न आय ॥ धमकरी मफलो करांरे ॥ जीम दुखदूर पृलाय ॥ वु-
 टक ॥ जीम दुखदूर पृलायते जाणो ॥ गुरु उपदेश ते एमो नवाण्यो
 ॥ माभळी पयनजी थया वैरागी ॥ ममना छुटी समता गळेवागी ॥

म० ॥ तेह प्रमांणे पाल दुर करे सद्ग व्याभिनां ॥ म० ॥ ५ ॥ म० ॥
 गुमती गुप्ती चीतधार ॥ दया दील मांहे आंणीये ॥ म० ॥ म० ॥
 साधवुं सकल गरीर ॥ चार कणाय दुरे करी ॥ म० ॥ ६ ॥ म० ॥
 उण वीथ कणुं चारीत्र ॥ अनंत तीर्थकर उम कहें ॥ म० ॥ म० ॥
 पंच माहाव्रत धार ॥ जीम छुटे भन दुख थकी ॥ म० ॥ ७ ॥ म० ॥
 हवे मत लावोदेर ॥ स्त्रीण क्षीण जाय आयुपतणी ॥ म० ॥ म० ॥
 घडीय वरप सम जाय ॥ दीवरा वीते युग मारीपो ॥ म० ॥ ८ ॥
 म० ॥ पाको पीपल पांन ॥ कीम ठेरे वृक्ष उपरे ॥ म० ॥ म० ॥ डाभ
 अणी जलवुंद ॥ वायु चलंते खीर पडे ॥ म० ॥ ९ ॥ म० ॥ तीम
 मानुपनी देह ॥ काल आयक झपटले ॥ म० ॥ म० ॥ मात पीता प-
 रीवार ॥ उभा डवडव रोयरया ॥ म० ॥ १० ॥ म० ॥ काल न चुकें
 फाल ॥ जीम वाज झपटे चड कलो ॥ म० ॥ म० ॥ नही वावे तीर वं-
 दुक ॥ नही कोइ मारे वरसीये ॥ म० ॥ ११ ॥ म० ॥ नही कोइ हा
 कोन हुक ॥ नही कोइ मार न पीटले ॥ म० ॥ म० ॥ काया नगरके
 मांय ॥ हाहाकार थइ रयो ॥ म० ॥ १२ ॥ म० ॥ तीण वेला नही
 कोय ॥ शरणो देवगहारले ॥ म० ॥ म० ॥ नही कोइ आय उपाय
 ॥ मंत्रयंत्र जडी ओपदी ॥ म० ॥ १३ ॥ म० ॥ मात पीता परीवार ॥
 छुत दारा सविकारमां ॥ म० ॥ म० ॥ नही कोइ मंत्रीमेल ॥ सगा स-
 णीजा कोइ नही ॥ म० ॥ १४ ॥ म० ॥ एक सगो अरीहंत ॥ पुन्य
 पाप दोय संग चले ॥ म० ॥ म० ॥ काचनी कुंपी प्रमांण ॥ मांनुप
 देही अःसारले ॥ म० ॥ १५ ॥ म० ॥ मरण समे होवे ग्यांन ॥ सम-
 कीतीनें अवाधि नीरमलो ॥ म० ॥ म० ॥ मारग परभवनो जाण ॥

गुरु० ॥ ७ ॥ श्रीमानंदेव मरी जगमोभताजी ॥ श्रीरीतुव प्रभ जग
 भाण ॥ श्री जयानंद मुरी भव केतरीजी ॥ श्रीरति प्रभा आदीन्य प्र-
 माणरे ॥ प्रा० ॥ गुरु० ॥ ८ ॥ श्रीगजोदेव मरी जग जग लीगोजी ॥
 श्रीप्रद्युम्न मरी पदवंत ॥ श्रीमान देवमुरी जगदीपताजी ॥ श्रीवीमल
 चद्रमरी भाग्यवंतरे ॥ प्रा० ॥ गुरु० ॥ ९ ॥ श्रीउद्योतन मरी रतिजिग
 नपाजी ॥ श्रीमर्चदेव मरीउंद्र समान ॥ श्रीदेवमरी देवपरे सोभताजी ॥
 श्री सर्व देवमुरी माने आणारे ॥ प्रा० ॥ गुरु० ॥ १० ॥ श्रीगजोभद्र
 मुरीनी आणनेंजी ॥ पाले श्रीमुनीचंद्र मुरीम ॥ श्रीभजीत देवमुरी ज-
 ग जीतीयाजी ॥ श्री विजयसिंह मुरी तेहनं जीप्यरे ॥ प्रा० ॥ गुरु०
 ॥ ११ ॥ श्री सोमप्रभ मुरी जग नीरमलाजी ॥ श्रीजगचद्र मुरी नम
 पाट ॥ श्रीदेवेंद्र मुरीस्वर जांणीयेजी ॥ श्रीधर्मगोप मुरीनं धर्मानो थाट
 ॥ प्रा० ॥ गुरु० ॥ १२ ॥ श्रीसोम प्रभ मुरी नमीउण करीजी ॥ श्रीसोम
 तीलक करचा ग्रंथ ॥ श्रीदेव सुंदर मुरी जादुगराजी ॥ श्रीसोम सुंदर
 मुरी नीग्रंथरे ॥ प्रा० ॥ १३ ॥ श्रीमुनीचंद्र सुंदर मुरी शांति करा
 रच्योजी ॥ श्रीरत्नशेखर मुरी रत्न समान ॥ श्रीलक्ष्मीसागर मुरी
 चीत नीरमलाजी ॥ श्रीसुमती साधु मुरी साधु समानरे ॥ प्रा० ॥ गुरु०
 ॥ १४ ॥ श्रीहेम वीमल मुरी जक्ष वस कीयोजी ॥ श्री आनंद वीमल
 मुरी सुखकार ॥ श्रीवीजय दान मुरी ग्यान दातार छेजी ॥ श्रीहीरवी-
 जयमुरी आधाररे ॥ प्रा० ॥ गुरु० ॥ १५ ॥ श्रीवीजयसेन मुरी जग-
 जांणीये जी ॥ श्रीवीजय देवमुरी मनधार ॥ श्रीवीजय सिंह मुरीस्वरू-
 जी ॥ श्रीवीजय प्रभमुरी अवधाररे ॥ प्रा० ॥ गुरु० ॥ १६ ॥ श्रीवीजय
 रत्न मुरीस्वर सोभताजी ॥ श्रीविजय क्षम्या मुरी सुखकार ॥ श्रीवि-

20